हिन्दी पाक्षिक

सेमन्या कण्वघाटी

RNI No.: UTTHIN/2013/54659

वर्ष-12 अंक-13 हरिद्वार, गुरूवार,15 मई, 2025 मूल्य-दो रूपया मात्र पृष्ठ-8

महिला एवं युवक मंगल दलों की प्रोत्साहन राशि बढ़ाई जाएगी : मुख्यमंत्री

देहरादून(संवाददाता)। मुख्यमंत्री पुष्कर धामी ने कहा कि राज्य में युवक एवं महिला मंगल दलों को मिलने वाली प्रोत्साहन राशि बढ़ाई जाएगी। इसके साथ ही दलों को आत्मनिर्भर बनाने व लोन की सुविधा देने के लिए नीति बनाने का भी ऐलान किया गया है। मुख्यमंत्री ने गुरूवार को मुख्य सेवक सदन में प्रदेश भर से आए युवक एवं महिला मंगल दलों के प्रतिनिधियों के साथ संवाद किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने घोषणा की कि महिला एवं युवक मंगल दलों को मिलने वाली प्रोत्साहन राशि चार हजार रूपये से बढ़ाकर पांच हजार रुपए की जाएगी। उन्होंने कहा कि मंगल दलों को डिजिटल मिशन के तहत प्रशिक्षण दिया जाएगा और राज्य स्तर पर एक पोर्टल बनाकर युवा और महिला मंगल दलों का नेटवर्क बनाया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर कहा कि मंगल दलों द्वारा सामाजिक सेवा, सांस्कृतिक संरक्षण और आपदा प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में सराहनीय कार्य किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि मंगल दल प्रदेश की सामाजिक चेतना को मजबूत करने,

लोक परंपराओं को आगे बढ़ाने, गांवों में सकारात्मक बदलाव लाने में भी अहम भूमिका निभा रहे हैं। इस अवसर पर विधायक सुरेश गड़िया, पीएमजीएसवाई राज्य स्तरीय अनुश्रवण परिषद के उपाध्यक्ष शिव सिंह बिष्ट, विशेष प्रमुख सचिव अमित सिन्हा, सचिव एसएन पांडेय और निदेशक युवा कल्याण प्रशांत आर्य मौजूद रहे। आपदा के समय फर्स्ट रिस्पॉन्डर की भूमिका मुख्यमंत्री ने कहा कि महिला एवं युवक मंगल दलों की आपदा के समय 'फर्स्ट रिस्पॉन्डर की भूमिका है। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार मंगल दलों को सशक्त बनाने के लिए अनेक योजनाएं संचालित कर रही है। मंगल दलों को स्वरोजगार के लए 50 हजार रूपये से 3.5 लाख रूपए तक की आर्थिक सहायता दी जा रही है। उन्होंने कहा कि युवा मंगल दल स्वावलंबन योजना के तहत 5 करोड, ग्रामीण खेलकूद एवं स्वास्थ्य संवर्धन के लिए 2 करोड, मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना के तहत 60 करोड रुपए का प्रावधान किया गया है। महिला व युवक मंगल दलों ने दिए सुझाव इस अवसर पर युवक व महिला मंगल दलों के प्रतिनिधियों ने कई सुझाव दिए।

उत्तरकाशी के आजाद डिमरी ने प्रोत्साहन राशि बढ़ाने, बागेश्वर की खृष्टि कोरंगा ने ब्लॉक व जिला स्तर की बैठकों में शामिल करने, चंपावत की मोनिका ने जानकारियों एवं सूचनाओं के लिए पोर्टल बनाने, चमोली के सुरजीत ने दलों को डिजिटल प्रशिक्षण देने की व्यवस्था का सुझाव दिया।

आईएएस सोनिका सिंह ने किया मेला अधिकारी कुंभ का पदभार ग्रहण

हरिद्वार (संवाददाता)। शासन के निर्देशों के क्रम में आईएएस सोनिका ने मंगलवार को मेला अधिकारी कुंभ हरिद्वार का पदभार ग्रहण कर लिया है। मेला नियंत्रण भवन (सीसीआर) में प्रेस से वार्ता करते हुए उन्होंने कहा कि आगामी कुंभ का आयोजन सुव्यवस्थित एवं सुरक्षित ढंग से भव्यता के साथ आयोजित किया जाएगा, जिसके लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं एवं तैयारियां की जा रही हैं। जिसके लिए केन्द्र सरकार के दिशा निर्देशन में शासन स्तर एवं जिला स्तर पर कई महत्वपूर्ण बैठके आयोजित की जा चुकी हैं। उन्होंने कहा कि कुंभ को सुव्यवस्थित एवं भव्यता के साथ आयोजन करने के लिए सभी आवश्यक तैयारिया की जा रही है जिसमें मुख्यत: सुरक्षा के दृष्टिगत,

पार्किंग, यातायात एवं साफ सफाई के लिए रोड मैप तैयार किया जा रहा है जिसके लिए सभी के सुझाव भी लिए जाएगें, ताकि व्यवस्था सुव्यवस्थित तरीके से की जा सके। उन्होंने कहा का कुम्भ मेले के सफल आयोजन हेतु सभी से समन्वय करते हुए कार्य किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि आवश्यकता के अनुरूप ही निर्माण कार्य कराएं जाएंगे।

एसपी देहात से मिलकर आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग की

रुड़की (संवाददाता)। फर्नीचर कारोबारी के पुत्र से मारपीट के मामले में पुलिस ने पीड़ित के पिता की तहरीर पर पिता पुत्र समेत तीन लोगों के खिलाफ हत्या का प्रयास का मुकदमा दर्ज किया है। मंगलवार को पीड़ित के परिजन ने एसपी देहात शेखर चंद्र सुयाल से मिलकर आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग की है। एसपी देहात ने जल्द गिरफ्तारी का आश्वासन दिया है।

गंगनहर कोतवाली क्षेत्र के चाव मंडी निवासी अमरीक सिंह की चाव मंड़ी में फर्नीचर की दुकान है। रविवार रात दुकान बढ़ाने के बाद उसका बेटा पुनीत अपने दोस्त अमित के साथ बाइक पर सवार होकर किसी से फोन पर बात कर रहा था। आरोप है कि तभी पड़ोस के रहने वाले दो युवकों ने गाली गलौज करते हुए उसके ऊपर लाठी डंडों से हमला कर दिया था। हमले में पुनीत व अमित को भी गंभीर चोटें आई थी। घायल पुनीत को प्राथमिक उपचार के बाद एम्स रेफर कर दिया था।

पुलिस मुठभेड़ में गोली लगने से घायल बदमाश गिरफ्तार, अन्य फरार तलाश जारी

हरिद्वार (हमारे संवाददाता)। जिले के पिरान कलियर थाना क्षेत्र में पुलिस और बदमाशों के बीच मुठभेड़ हो गई। इस मुठभेड़ में एक बदमाश के पैर में गोली लग गई। जिससे वह घायल हो गया। जबकि उसके अन्य साथी मौके से फरार हो गए। पुलिस द्वारा घायल बदमाश को उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना के बाद आला अधिकारी भी मौके पर पहुंचे हैं और घटना की जानकारी जुटाई. घायल का नाम नोशाद (35 वर्ष, पुत्र ईसाक निवासी सिकरौढा थाना भगवानपुर) है। आरोपी के खिलाफ पहले भी गौ तस्करी के कई मुकदमे दर्ज हैं। मंगलवार अल सुबह पिरान कलियर थाना पुलिस को रोलहेडी गांव के पास जंगल में गौ तस्करी करने वाले बदमाशों की सूचना मिली थी। सूचना पर तत्काल पुलिस टीम बताए गए ठिकाने पर पहुंची थी, जहां पर पुलिस टीम ने बदमाशों की तलाश शुरू की। इसी दौरान उन्हें कुछ संदिग्ध दिखाई दिए। पुलिस टीम द्वारा उनसे पूछताछ करने के दौरान बदमाशों ने पुलिस पर फायरिंग कर दी। जवाबी फायरिंग में पुलिस की एक गोली बदमाश के पैर में जा लगी। जिससे वह घायल होकर नीचे गिर गया। हालांकि, बदमाश के अन्य साथी मौके से फरार होने में कामयाब रहे, जिनकी पुलिस तलाश कर रही है। बताया जा रहा है कि सभी बदमाश गौ तस्कर हैं। पुलिस द्वारा घायल बदमाश को उपचार के लिए रुड़की के सिविल अस्पताल में भर्ती कराया गया है। मुठभेड़ की सूचना मिलते ही पुलिस के आला अधिकारी भी मौके पर पहुंचे हैं और घटना की जानकारी जुटाई गई है। इसी के साथ अधिकारियों ने सिविल अस्पताल पहुंचकर घायल से पूछताछ की है।

सड़कों और नालियों से विद्युत पोल हटाने को कहा

नई टिहरी(संवाददाता)। नगर पंचायत घनसाली में पहली बोर्ड बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में तमाम जनहित मुद्दों को लेकर चर्चा की गई व अधिकांश छोटी-छोटी समस्याओं का मौके पर ही निस्तारण किया गया। बोर्ड बैठक में डिप्टियाणा गदेरे में उचित जल निकासी व सुरक्षा दीवार सहित विद्युत निगम से जुड़ी समस्याओं पर चर्चा की गई। विद्युत निगम से सड़कों और नालियों से विद्युत पोट हटाने को कहा गया। गुरुवार को नगर पंचायत अध्यक्ष आनंद बिष्ट की अध्यक्षता व क्षेत्रीय विधायक शक्ति लाल शाह की मौजूदगी में नगर पंचायत की पहली बोर्ड बैठक बुलाई गई। बैठक में नगर अध्यक्ष आनंद बिष्ट ने बताया कि, सिंचाई विभाग को डिप्टियाणा गदेरे में उचित जल निकासी व सुरक्षा दीवार को लेकर सर्वे करने का आदेश दिया गया है। साथ ही भैंसवाड़ा पुल से गैस गोदाम तक भिलंगना नदी के किनारे हाईटेक सुरक्षा दीवार के बारे में चर्चा की गई। वहीं उन्होंने नगर पंचायत में निर्माणाधीन पार्किंग को लेकर संबंधित विभाग को तत्काल कार्य पूर्ण करने के आदेश दिए।

दिव्यांगजनों को दी विधि सेवाओं की जानकारी

देहरादून। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण ने मानसिक रूप से बीमार और बौद्धिक रूप से दिव्यांग लोगों के लिए कानूनी सेवाएं प्रदान करने, बाल विवाह और श्रम मुक्त उत्तराखंड को लेकर गुरुवार को मोथरोवाला में अभियान शुरू किया। उन्होंने कहा कि बाल विवाह मुक्त उत्तराखंड, बाल श्रम मुक्त उत्तराखंड, समाज में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों को खत्म करने के लिए सभी आसपास के लोगों को भी जागरूक करें। इस दौरान जिला विधिक सेवा प्राधिकरण देहरादून की जरूरतमंदों को पांच व्हीलचेयर, 04 वॉकर, 10 बैसाखी प्रदान की गई। इस दौरान पता चला कि कुछ दिव्यांग लोगों ने प्रमाण पत्र नहीं बनाए हैं। इसपर प्राधिकरण की सचिव ने संबंधित अधिकारियों को प्रमाणपत्र बनाने के निर्देश दिए। इस दौरान दिव्यांगों के लिए स्वास्थ्य जांच शिविर भी आयोजित किए गए।

सम्पादकीय

भारत के सामने असल चुनौती

यह दुर्भाग्यपूर्ण हकीकत है कि आतंकवादी जब-तब हमारे सुरक्षा घेरे में छिद्र ढूंढने में कामयाब होते रहे हैँ। इस मोर्चे पर कहां चूक रह जाती है और इन छिद्रों को कैसे भरा जाए- भारत के सामने असल चुनौती यह है। पहलगाम हमले के बाद भारत सरकार ने सख्त संदेश देते हुए पांच महत्त्वपूर्ण कदम उठाए हैं। इनके तहत सिंधु जल संधि को लंबित अवस्था में डाल दिया गया है, अटारी चौकी को बंद कर दिया गया है, अब पाकिस्तानी नागरिकों को सार्क वीजा रियायत योजना की सुविधा नहीं मिलेगी, नई दिल्ली स्थित पाकिस्तानी उच्चायोग में तैनात रक्षा, सेना, नौ सेना और वायु सेना सलाहकारों को भारत से जाने को कहा गया है और इस्लामाबाद स्थित अपने सलाहकारों को भारत वापस बुला रहा है; तथा दोनों स्थानों पर उच्चायोगों में कर्मचारियों की संख्या 55 घटा कर 30 करने का फैसला हुआ है। इनके बीच सिंधु जल संधि को निलंबित करने का व्यवहार में क्या असर होगा, यह अभी स्पष्ट नहीं है। योजना अगर भारत से पाकिस्तान जाने वाले पानी को रोकना है, तो उसके लिए ढांचा बनाना होगा, जो तुरंत नहीं हो सकता। वैसे भी यह विश्व बैंक की मध्यस्थता में हुआ करार है, जिसे अंतरराष्ट्रीय पंचाट में ले जाने का पाकिस्तान को अधिकार है। बाकी निर्णयों के जरिए दिए गए सख्त पैगाम संभवतः जितना पाकिस्तान के लिए है, उतना ही भारत की नाराज जनता के लिए भी। बहरहाल, इन कदमों से आतंकवाद की कमर तोडने़ में क्या मदद मिलेगी, यह साफ नहीं है। भारत इस नतीजे पर है कि पहलगाम हमला लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े दहशतगर्दों ने किया, जिन्हें पाकिस्तान का संरक्षण हासिल है। इसलिए पाकिस्तान को सख्त संदेश देना तो जरूरी है, फिर भी अंतिम उद्देश्य आतंकवादी संगठनों और उनके समर्थक ढांचे को ध्वस्त करना होना चाहिए। उसके लिए सरकार की क्या योजना है, इसको लेकर अस्पष्टता बनी हुई है। अतीत में सर्जिकल स्ट्राइक और बालाकोट ऑपरेशन जैसे कदम भी सख्त संदेश देने के अलावा कुछ हासिल नहीं कर सके। यह दुर्भाग्यपूर्ण हकीकत है कि आतंकवादी जब-तब हमारे सुरक्षा घेरे में छिद्र ढूंढने में कामयाब होते रहे हैँ। इस मोर्चे पर कहां चूक रह जाती है और इन छिद्रों को कैसे भरा जाए- भारत के सामने असल चुनौती यह है। चुनौती अपने लोगों को आतंक के साये से सुरक्षा देना है। आशा है, सरकार इसके लिए भी कारगर योजना

आतंकवाद का केंद्र पाकिस्तान

पाकिस्तान की सेना ने पहलगाम का हमला करवा तो लिया, लेकिन अब भारत की संभावित प्रतिक्रिया से घबराहट में है। उसकी घबराहट का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि पूरे मामले में भारत ने पाकिस्तान का सीधे नाम नहीं लिया फिर भी बौखलाहट में उसने दुनिया के सामने गुहार लगाना चालू कर दिया। प्रधानमंत्री के मधुबनी के भाषण के बाद तो पाकिस्तान की पूरी सेना बुरी तरह दहशत में हैं। वहां का मीडिया बता रहा है कि तीनों सेनाओं के अधिकारी कई घंटों से सोए नहीं हैं कि पता नहीं कब भारत हमला कर दे। दरअसल,पहलगाम आतंकी हमले के दूसरे दिन बुधवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में रक्षा मामलों के लिए बनी कैबिनेट समिति ने अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिए, जिनमें 1960 में विश्व बैंक के हस्तक्षेप से तैयार की गई सिंधु जल संधि को निलंबित करना भी शामिल है। कैबिनेट की सुरक्षा समिति द्वारा दिए गए निर्णय की जानकारी भारतीय विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने दी। भारतीय विदेश मंत्रालय ने अपनी पूरी प्रेस ब्रीफिंग में कहीं भी पाकिस्तान का नाम नहीं लिया, इसके बावजूद पाकिस्तान ने इस पर तुरंत प्रतिक्रिया दी। दरअसल,भारत ने पहलगाम आक्रमण के बाद जो विभिन्न निर्णय लिए हैं, उनसे पाकिस्तान में हडक़ंप मचा हुआ है। पाकिस्तान की सेना को आशंका है कि सिंधु जल संधि के निलंबित होने से पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में हाहाकार मच जाएगा। ध्यान रहे सिंधु जल संधि का सबसे ज्यादा लाभ पाकिस्तान का पंजाब उठाता है क्योंकि पाकिस्तानी सेना के ज्यादातर अधिकारी पंजाबी हैं। बहरहाल, पहलगाम का हमला ऐसे समय किया गया जब अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस भारत की यात्रा पर थे। हालांकि पाक ने पर्यटकों की मौत पर शोक व्यक्त करने का प्रपंच तो रचा, लेकिन हमले की निंदा करने से परहेज किया। अब ऐसे में सवाल है उरी(2016) और पुलवामा (2019) की तरह क्या भारत पहलगाम के बाद ऐसी प्रतिक्रिया को जन्म देगा ? वैसे कूटनीतिक मोर्चे पर, भारत के लिए अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में इस्लामाबाद को बेनकाब और शर्मिंदा करने का एक बड़ा अवसर है। पहलगाम जांच के नतीजों और तहव्वुर राणा से पूछताछ से भारत के इस रुख की पुष्टि होने की उम्मीद है कि पाकिस्तान आज भी आतंकवाद का केंद्र बना हुआ है। बहरहाल, पहलगाम में पाक पोषित आतंकियों ने जो खूनी खेल खेला, उसने पूरे देश को झकझोरा है। सैर-सपाटे के लिए गए लोगों को मौत मिलेगी, ऐसी किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी,लेकिन एक हकीकत है कि देश-विदेश के 26 पर्यटक आतंकियों की गोली के शिकार हुए। हमले ने शेष देश के साथ कश्मीर की आत्मा को भी झकझोरा है। यह त्रासदी सिर्फ जम्मू-कश्मीर की ही नहीं है, बल्कि इस हमले ने पूरे देश को गहरा जख्म दिया है। उल्लेखनीय तथ्य यह है कि इस पीड़ादायक हादसे के बाद घाटी के लोगों ने हमले की एकजुट होकर निंदा की गई है। घाटी में 35 साल बाद पहली बार आतंकी हमले के खिलाफ बंद का आयोजन किया गया है।

स्वर्गसुंदरी, विष्णुपदी, मोक्षदायिनी, पापनाशिनी भगवती माता गंगा

-अशोक "प्रवृद्ध"

भारतीय परंपरा, भारतीय सभ्यता- संस्कृति एवं समस्त भारतीयों के हृदय का स्पंदन, कलयुग में मोक्ष का पर्याय समझी जाने वाली त्रिपथगा, स्वर्गसुंदरी, विष्णुपदी, मोक्षदायिनी, हिमालयपुत्री, पापनाशिनी भगवती माता गंगा भारत में अत्यंत प्राचीन काल से स्मरणीय, नमनीय, पूजनीय व वंदनीय मानी जाती रही है। मान्यता है कि गंगा के स्मरण से मनुष्य अपने दूषित कर्म से मुक्त, दर्शन से अपने संपूर्ण पाप कर्म से मुक्त और स्पर्श से इस जन्म में सद्गति प्राप्त कर मोक्ष को प्राप्त हो जाता है। इसलिए प्रत्येक भारतीय गंगा को माता सदृश्य मानते हैं। गंगा का नाम मुख पर आते ही जिह्वा शुद्ध, पवित्र और हृदय श्रद्धा से आप्लावित हो उठता है। व्यक्ति गंगा में स्नान का अवसर पाकर कृत-कृत्य हो जाते हैं। गंगाजल को भारतीय अमृत तुल्य मानकर उसका पान करते हैं। गंगा के प्रवाह में अपने पूर्वजों की अस्थियों का विसर्जन कर भारतीय अपने को पूर्वजों के क़र्ज़ से मुक्त कर मानते हैं। यही कारण है कि विष्णु के चरण से उत्पन्न हुई, विष्णु से भक्ति रखने वाली और विष्णु की पूजा करने वाली गंगा से जन्म से मरण तक किये गए समस्त पापों से रक्षा करने की प्रार्थना करते हैं। स्वर्ग, अन्तरिक्ष एवं पृथ्वी में अवस्थित 35 करोड़ तीर्थ सभी जाह्नवी गंगा के ही देव हैं। देवगण उन्हें आनन्द प्रदायिनी नंदिनी और नलिनी कहकर पुकारते हैं। वस्तुतः गंगा भारतीयों के मन में कुछ इस प्रकार रच-बस गई है, हृदय में इस तरह समाहित हो गई है कि इसे भारतीय जनमानस से भिन्न किया ही नहीं जा सकता। भारत की सर्वाधिक महिमामयी नदी गंगा को देवनदी, मंदाकिनी, भगीरथी, विष्णुपगा, देवपगा, दक्षा, पृथ्वी, विहगा, विश्वकाया, अमृता, शिवा, विद्याधरी, सुप्रशान्ता, शान्तिप्रदायिनी आदि नामों से भी जाना जाता है। भारत के उत्तराखंड, उत्तरप्रदेश, बिहार और बंगाल आदि राज्यों से होकर गुज़रने वाली गंगा नदी भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। गंगा एक नदी मात्र नहीं, अपितु भारत के समस्त विकास, उत्थान और वैभव की युगों -युगों की साक्षी है। गंगा संपूर्ण भारतीय सभ्यता -संस्कृति, आस्था-विश्वास, धर्म, दर्शन, चिंतन, मनन का जीवंत इतिहास है। यही कारण है कि महिमामयी विशाल हृदयवाली, दुःख हारिणी पतितपावनी, जाह्नवी, भागीरथी माता गंगा को भारत में पवित्र, शुभ मानकर एक देवी की भांति पूजा जाता है। पौराणिक मान्यतानुसार कपिल मुनि के शाप से शापित राजा सगर के साठ हजार पुत्रों के जलकर भस्म हो जाने पर उनके उद्धार के लिए राजा सगर के वंशज भगीरथ के द्वारा की गई घोर व कठिन तपस्या से प्रसन्न होकर माता गंगा वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि को स्वर्गलोक से भगवान शिव की जटाओं में पहुंची थीं। स्वर्गलोक से उतर शिव की जटा में समाहित होने अर्थात गंगोत्पति की इस तिथि बैशाख शुक्ल सप्तमी को गंगा सप्तमी, गंगा जयंती, गंगा पूजन अथवा गंगा जन्मोत्सव के नाम से जाना, पूजा जाता है। शिव की जटाओं से गंगा का इस पृथ्वी पर अवतरण ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को हुआ, जिसे गंगा दशहरा के नाम से संज्ञायित किया जाता है। गंगा को भारत भूमि और भारतीय संस्कृति में अत्यंत ही उच्च व सम्मानित स्थान प्राप्त है। मान्यतानुसार गंगा के स्पर्श से ही राजा सगर के साठ हज़ार पुत्रों का उद्धार हो सका। गंगा को मोक्षदायिनी भी कहा जाता है। गंगोत्पति और गंगावतरण की इन दोनों ही तिथियों में गंगा को स्मरण, नमन, पूजन, वंदन की वृहद परिपाटी है। इन तिथियों में स्नान- दान-पुण्य का विशेष महत्व है। कुंभ पर्व, गंगा दशहरा, पूर्णिमा, व्यास पूर्णिमा, कार्तिक पूर्णिमा, माघी पूर्णिमा, मकर संक्रांति, गंगा सप्तमी आदि प्रमुख अवसरों पर जीवनदायिनी गंगा नदी के तट पर मेले और गंगा स्नान आदि के आयोजन होते हैं, जिनमें करोड़ों श्रद्धालु देश- विदेश से शामिल होने के लिए आते हैं। वेद, उपनिषद, पुराण, रामायण, महाभारत आदि भारत के प्राचीन ग्रंथ भगवती गंगा की शुभता, महत्ता व पवित्रता का गान करते हैं। भारत के प्रयाग, वाराणसी आदि अनेक तीर्थ गंगा तट पर ही स्थित हैं। मान्यतानुसार गंगा देव नदी है। जिसका पृथ्वी पर अवतरण पापियों के मोक्ष के लिए हुआ है। गंगा के मात्र स्मरण, दर्शन, पान व स्नान करने से ही मनुष्य तर जाता है। गंगा माता इस संसार के अपने हर एक पुत्र को अपनी गोद में जन्म लेना चाहती है। अपने पुत्रों को समस्त सुख प्रदान करती है और दुःख को मूल से हरती है। प्रचलित मान्यतानुसार मृत्युशय्या पर पड़े व्यक्ति के मुख में गंगाजल डाल देने से वह बंधनों से मुक्त हो जाता है। वाराणसी के गंगा तट पर मणिकार्णिका घाट पर मृत शरीर का अंतिम संस्कार होने से उस प्राणी को मोक्ष मिलता है। लौकिक मान्यतानुसार गंगा जल सर्वथा पवित्र है। इसमें किसी भी मलिन वस्तु के संपर्क से मलिनता नहीं आती, अपितु जिस वस्तु से उसका स्पर्श हो जाता है, वह निश्चित रूप से पवित्र व शुद्ध हो जाती है। समस्त संस्कारों में गंगाजल का उपयोग आवश्यक है। पंचामृत में भी गंगाजल को अमृत माना गया है। गंगा के साथ अनेक पर्व व उत्सवों का सीधा संबंध है। वैज्ञानिक मान्यतानुसार गंगाजल में विविध शारीरिक और मानसिक रोगों से मुक्ति दिलाने के औषधीय गुण हैं। इसके पान, स्नान, स्पर्शन से नव प्राणशक्ति का संचार होता है। वृद्धावस्था में शरीर के जर्जर और व्याधिग्रस्त हो जाने पर केवल गंगाजल ही इसका उपचार है। वैज्ञानिकों के अनुसार गंगा जल में बैक्टीरिया को खाने वाले बैक्टीरियोफ़ाज वायरस होते हैं। ये वायरस बैक्टीरिया की संख्या मे वृद्धि होते ही सक्रिय होते हैं और बैक्टीरिया को मारने के बाद फिर छिप जाते हैं। गंगा जल में बैक्टीरिया को मारने की क्षमता है।

पवित्र व पुनीततम नदी गंगा के तटों पर हरिद्वार, कनखल, प्रयाग एवं काशी जैसे परम प्रसिद्ध तीर्थ अवस्थित हैं। प्रसिद्ध नदीसूक्त ऋग्वेद 1/ 75/ 5-6 में सर्वप्रथम गंगा का ही आह्वान व स्तवन किया गया है। शतपथ ब्राह्मण 13/5/4/11 एवं 13 तथा ऐतरेय ब्राह्मण 39/ 9 में गंगा एवं यमुना के किनारे पर भरत दौष्यंति की विजयों एवं यज्ञों का उल्लेख हुआ है। महाभारत अनुशासन पर्व 26/26-103 एवं नारदीय पुराण, उत्तरार्ध, अध्याय 38-45 एवं 51/1-48, पद्म पुराण 5/60/1-127, अग्नित्र अध्याय 110, मत्स्य पुराण, अध्याय 180-185, पद्म पुराण, आदिखण्ड, अध्याय 33-37, स्कन्द पुराण काशीखण्ड, अध्याय 33-37 में गंगा की महत्ता एवं पवित्रीकरण के विषय में सैकड़ों प्रशस्तिजनक श्लोक हैं। स्कन्द पुराण में गंगा के एक सहस्त्र नामों का उल्लेख है। मत्स्य, कूर्म, गरुड़ एवं पद्म पुराणों में भी गंगा, गंगा स्नान, गंगा महिमा का अतिशय वर्णन प्राप्य हैं। पद्म पुराण 6/267/47 के अनुसार गंगा मंदाकिनी के रूप में स्वर्ग में, गंगा के रूप में पृथ्वी पर और भोगवती के रूप में पाताल में प्रवाहित होती है। विष्णु पुराण 2/8/109 पद्म, पुराण 5/25/188 में गंगा को विष्णु के बायें पैर के अँगूठे के नख से प्रवाहित माना गया है। मत्स्य पुराण 121/38-41, ब्रह्माण्ड पुराण 2/18/39-41 एवं 1/3/65-66) आदि पुराणों के अनुसार शिव ने अपनी जटा से गंगा को सात धाराओं में परिवर्तित कर दिया, जिनमें तीन (नलिनी, ह्लादिनी एवं पावनी) पूर्व की ओर, तीन (सीता, चक्षुस एवं सिन्धु) पश्चिम की ओर प्रवाहित हुई और सातवीं धारा भागीरथी हुई। कूर्म पुराण 1/46/30-31 एवं वराह पुराण अध्याय 82 के अनुसार गंगा सर्वप्रथम सीता, अलकनंदा, सुचक्ष एवं भद्रा नामक चार विभिन्न धाराओं में बहती है। अलकनंदा दक्षिण की ओर बहती है, भारतवर्ष की ओर आती है और सप्तमुखों में होकर समुद्र में गिरती है। ब्रह्माण्ड पुराण 73/68-69 में गंगा को विष्णु के पाँव से एवं शिव के जटाजूट में अवस्थित माना गया है। एक दूसरे पौराणिक आख्यान के अनुसार गंगा हिमालय और मैना की पुत्री तथा उमा की भगिनी थीं। महाभारत की एक कथा उसे कुरुराज शान्तनु की पत्नी और भीष्म की माता बताती है। जिसमें भीष्म का दूसरा नाम गांगेय भी है। गंगा का सम्बन्ध कार्तिकेय के मातृत्व से भी है। पुराणों के अनुसार विवद्गंगा, आकाशगंगा अथवा स्वर्गगंगा विष्णु के अँगूठे से निकली हैं, जिसका पृथ्वी पर अवतरण भगीरथ के स्तवन से कपिल मुनि द्वारा भस्मीकृत राजा सगर के 60,000 पुत्रों की अस्थियों को पवित्र करने के लिए हुआ। भगीरथ के साथ इसी संयोग के कारण गंगा का एक नाम भागीरथी पड़ा।

स्वर्ग से उतरने के कारण गंगा अत्यन्त कुपित हो उठी थीं और उसके कोप के कारण पृथ्वी पर उसकी धारा पड़ते ही उनके बहकर नष्ट हो जाने के भय से शिव ने अपनी जटा में उसे समेट लिया, जिससे उनकी जटाओं में उलझ जाने के कारण धारा पृथ्वी पर सीधी नहीं पड़ी और गंगा की गति मंद हो गई। इसी कारण शिव का एक नाम गंगाधर भी पड़ा। गंगा का अवतरण तपस्वी जह्नु के यज्ञ के लिए घातक हुआ, जिससे क्रुद्ध होकर उस तापस ने गंगा को पी डाला और प्रार्थना के बाद उसने कान से गंगा की धारा निकाल दी, जिससे वह जाह्नवी कहलाई हैं। गंगा से संबंधित श्रीगंगा सहस्त्रनामस्तोत्रम् और आरती अत्यंत लोकप्रिय हैं, जिनका पाठ व प्रयोग लोग अपने दैनिक जीवन में श्रद्धा के साथ करते हैं।

हरिहर आश्रम, कनखल में हुआ, स्वामी अवधेशानन्द पॉलीक्लिनिक - नि:शुल्क चिकित्सा सेवा का शुभारम्भ

हरिद्वार । जूना अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानन्द गिरि महाराज ने कहा कि — सेवा ही धर्म का सार है। जो चिकित्सा सेवा आज प्रारम्भ हुई है, वह केवल एक परियोजना नहीं, बल्कि ईश्वरीय प्रेम से प्रेरित मानव-सेवा का व्रत है। हमारी संस्कृति ने सदा 'जीव मात्र के कल्याण' को प्राथमिकता दी है, और यह पॉलीक्लिनिक उसी भाव की साकार अभिव्यक्ति है।यह अभिनव प्रयास निस्संदेह न केवल हरिद्वार, बल्कि समूचे समाज के लिए एक आदर्श बनेगा - जहाँ आध्यात्मिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व एक साथ लोक-कल्याण के लिए समर्पित हैं। गौरतलब है कि श्री हरिहर आश्रम, कनखल (जूना अखाड़ा की गुरुगद्दी) स्थित मृत्युंजय परिसर में स्वामी अवधेशानन्द पॉलीक्लिनिक - निःशुल्क चिकित्सा सेवा का भव्य लोकार्पण बुधवार को सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन हरिद्वार के मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. आर. के. सिंह जी, चिकित्सा अधिकारी डॉ. हेमन्त जी, पुलकित मेमोरियल हॉस्पिटल बिजनौर के संस्थापक डॉ. हरीश मित्तल जी एवं डॉ. सविता मित्तल जी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। स्वामी अवधेशानन्द पॉलीक्लिनिक - निःशुल्क चिकित्सा सेवा का उद्देश्य है — हरिद्वार के कनखल क्षेत्र सहित आस-पास के गाँवों व नगरवासियों, साधु-सन्तों, ब्रह्मचारियों व आश्रमवासियों को सहज, समर्पित एवं पूरी तरह निःशुल्क चिकित्सा सुविधाएँ प्रदान करना। इस पॉलीक्लिनिक में आधुनिक चिकित्सा की सभी मूलभूत एवं विशेष सुविधाएँ उपलब्ध कराई गई हैं। विश्व प्रसिद्ध मेदान्ता के चिकित्सकों द्वारा समय-समय पर चिकित्सा शिविरों एवं अनेक प्रसिद्ध चिकित्सा विशेषज्ञों द्वारा नियमित चिकित्सा सेवा रहेंगी, जिनमें आपातकालीन ड्डक्ष्ठ (आवश्यकतानुसार भर्ती सुविधा) जनरल ह्वक्ष्ठ (बाह्य रोगी सेवा) मधुमेह, उच्च रक्तचाप की नियमित जाँच एवं उपचार तथा आधुनिक उपकरणों से युक्त परामर्श व औषधि वितरण पूर्णत: निःशुल्क दवा वितरण सेवा। समारोह में अनेक विशिष्ट सन्त-मनीषियों व चिकित्सा विशेषज्ञों की उपस्थिति रही। इस मौके पर रामकृष्ण मिशन हॉस्पिटल के प्रमुख पूज्य स्वामी दयामूर्त्यानन्द महाराज, स्वामी उमेश्वरानन्द महाराज, स्वामी अनदयानन्द महाराज, मेदान्ता गुरुग्राम से बाल रोग विशेषज्ञ डॉ. अंकित गुप्ता व स्त्रीरोग विशेषज्ञ डॉ. ईशा गुप्ता, डॉ. हेमन्त , डॉ. राकेश बाली, डॉ. अनुज मिश्रा, डॉ. प्रीति मिश्रा, डॉ. राजीव कुमार, डॉ. सुधाकर पाण्डेय , भारत माता मन्दिर एवं समन्वय सेवा ट्रस्ट से उदय नारायण पाण्डेय, हरिहर जोशी, अभिजीत, रश्मिता, हरिहर आश्रम के प्रबन्धक एवं एनीसेंट हेरिटेज फाऊंडेशन के न्यासी स्वामी कैलाशानन्द गिरि महाराज, विपिन वर्मा , सच्चिदानन्द नौटियाल , एडवोकेट प्रशान्त राजपूत, साथ ही हरिहर आश्रम के वरिष्ठ सन्त पूज्य स्वामी सोमदेव गिरि , स्वामी नित्यानन्द गिरि , स्वामी ज्ञानानन्द गिरि , स्वामी रामात्मानन्द गिरि , विष्णु प्रसाद जोशी , पवन शर्मा सहित अनेकों सन्त-महापुरुषों व बड़ी संख्या में श्रद्धालुजन भी साक्षी बने।

कार और ट्रैक्टर ट्रॉली की भिड़ंत में दो लोगों की मौत

हरिद्वार । मंगलौर कोतवाली क्षेत्र में ट्रैक्टर ट्रॉली और एक कार की जबरदस्त भिड़ंत हो गई। इस सड़क हादसे में दो लोगों की दर्दनाक मौत हो गई, जबकि एक अन्य व्यक्ति घायल हो गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने घायल को उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया है। आगे की कार्यवाही के लिए मृतकों के शवों को अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया गया है। मिली जानकारी के मुताबिक मंगलवार की देर रात मेरठ निवासी कार सवार हरिद्वार की ओर जा रहे थे। जैसे ही उनकी कार मंडावली गांव के पास उजाला फैक्ट्री कट के पास पहुंची तो कार के आगे चल रही एक ट्रैक्टर ट्रॉली से उनकी कार की जबरदस्त भिड़ंत हो गई। हादसा इतना जबरदस्त था कि कार ट्राली के अंदर जा घुसी। इसकी जानकारी स्थानीय लोगों ने पुलिस को दी। सूचना मिलते ही तत्काल पुलिस मौके पर पहुंची। इसके बाद पुलिस ने ट्रैक्टर चालक और कार में सवार दोनों व्यक्तियों को उपचार के लिए 108 के माध्यम से रुड़की के सिविल अस्पताल भिजवाया।

पीडब्ल्यू की वैष्णवी प्रताप ने रुड़की से सीबीएसई की 10वीं की परीक्षा में हासिल किए 99.4 प्रतिशत अंक

रुड़की। उत्तराखंड शिक्षा कंपनी, फिजिक्सवाला (पीडब्ल्यू) ने अपनी छात्रा वैष्णवी प्रताप की सफलता का जश्न मनाया। जिसने सीबीएसई की कक्षा 10वीं की परीक्षा में 99.4 प्रतिशत (500 में से 497 अंक) प्राप्त किए। उत्तराखंड के रुड़की की रहने वाली वैष्णवी ने तीन विषयों में 100/100 अंक प्राप्त किए, और साइंस में 99 अंक हासिल किए। वैष्णवी के परिवार में चार लोग हैं, उसके पिता जो एक गांव विकास अधिकारी हैं, उसकी मां जो गृहिणी हैं लेकिन पहले वकील रह चुकी हैं, और एक बड़ा भाई है। उसने एक ठोस पढ़ाई का टाइम टेबल बनाया, और ध्यान दिया कि हर विषय को अच्छे से समझे। उसने एनसीईआरटी की किताबें, पिछले सालों के पेपर, सैंपल पेपर और मॉक टेस्ट्स से खूब अभ्यास किया। वैष्णवी ने ये भी कहा कि फिजिक्सवाला के वीडियो लेक्चर और व्यवस्थित तरीके से तैयारी करने ने उसे सही दिशा में आगे बढ़ने में मदद की। वैष्णवी की डॉक्टर बनने की ख्वाहिश एक व्यक्तिगत अनुभव से जुड़ी हुई है। एक गंभीर हादसे के बाद, उसने देखा कि डॉक्टरों ने कितनी शांति और प्रभावी तरीके से स्थिति को संभाला और उसकी रिकवरी में मदद की। उनकी देखभाल ने सब कुछ बदल दिया। वह पल मेरे साथ हमेशा रहा, और तभी मुझे समझ में आया कि मुझे मेडिसिन की पढ़ाई करनी है। वैष्णवी को विज्ञान, खासकर बायोलॉजी, में स्वाभाविक रुचि है, और अब वह नीट पास करने के लिए कड़ी मेहनत करने की उम्मीद करती है। एक कोट जो वह अक्सर खुद को याद दिलाती है, वह है, अगर तुम स्वर्ग में जाना चाहते हो, तो पहले मरना होगा। इसका मतलब समझाते हुए उसने कहा, अगर तुम कुछ अहम हासिल करना चाहते हो, तो उसके लिए मेहनत करनी पड़ेगी। जिंदगी मुश्किल है, लेकिन हमेशा मौके देती है। अलख पांडे, शिक्षक, संस्थापक और सीईओ, पीडब्ल्यू, ने कहा, ष्वैष्णवी का रिजल्ट नियमित मेहनत और सही संसाधनों की अहमियत का उदाहरण है। पीडब्ल्यू में, हम अलग-अलग बैकग्राउंड से आए छात्रों को उनके शैक्षिक लक्ष्यों की तैयारी में मदद करने की कोशिश करते हैं।

प्रधानमंत्री मोदी पर आपत्तिजनक पोस्ट करने वाला युवक गिरफ्तार

देहरादून । सोशल मीडिया पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की आपत्तिजनक एआई वीडियो पोस्ट करने के मामले ने तूल पकड़ लिया है। भाजपा और रुद्रसेना फाउंडेशन के कार्यकर्ताओं ने युवक की गिरफ्तारी और गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज करने की मांग को लेकर त्यूणी थाने में धरना दिया।भाजपा मंडल अध्यक्ष की तहरीर पर पुलिस ने आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया। आरोपी को आज यानी मंगलवार को न्यायालय के समक्ष पेश किया जा रहा है। त्यूणी के मैंद्रथ निवासी सुलेमान ने भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ की एक आपत्तिजनक वीडियो चंद रोज पहले सोशल मीडिया पर पोस्ट की थी। उसके बाद जबरदस्त विरोध शुरू हो गया था। रुद्रसेना फाउंडेशन और भाजपा कार्यकर्ताओं ने युवक को गिरफ्तार करने की मांग की थी। वहीं, गिरफ्तारी न होने पर उग्र प्रदर्शन की चेतावनी भी दी थी। पुलिस ने रविवार को युवक को थाने में बुलाकर उससे पूछताछ की थी। युवक के स्मार्टफोन की जांच की। युवक ने अपनी फेसबुक आईडी से पांच एआई वीडियो डाली थी। इसमें चार पाकिस्तान के खिलाफ थी। वहीं, एक वीडियो आपत्तिजनक थी। युवक ने पुलिस को बताया कि था कि उसने गलती से वीडियो पोस्ट किया था। पुलिस ने युवक को पाबंद किया था। सोमवार को भाजपा और रुद्रसेना के कार्यकर्ता त्यूणी थाने पहुंचे। कार्यकर्ताओं ने पुलिस पर युवक पर हल्की धाराओं में कार्रवाई करने का आरोप लगाया। रुद्रसेना फाउंडेशन के अध्यक्ष राकेश तोमर उत्तराखंडी ने कहा कि प्रधानमंत्री और देश के खिलाफ आपत्तिजनक वीडियो शेयर करना सीधे तौर पर राजद्रोह है। देश के मान सम्मान पर आघात करने का प्रयास किया गया है। इससे राष्ट्रवादी लोगों की भावना को ठेस पहुंची है। कहा कि पुलिस ने हल्की धाराओं में मुकदमा दर्ज किया। उन्होंने आरोप लगाया कि युवक का परिवार को फर्जी ढंग से त्यूणी के मैंद्रथ में रह रहा है। वर्ष 1983 में फर्जी ढंग से जनजाति क्षेत्र की भूमि को अपने नाम करवाने वाले वन गुर्जरों के पट्टे निरस्त करने के लिए कार्यकर्ता मंगलवार से तहसील कार्यालय में भूख हड़ताल पर बैठेंगे। भाजपा मंडल अध्यक्ष त्यूणी नीरज शर्मा ने कहा कि घटना से पूरे क्षेत्र में आक्रोश है। सीओ बीएल शाह ने बताया कि आरोपी के खिलाफ राष्ट्रीय एकता पर प्रतिकूल प्रभाव डालने और आईटी एक्ट संबंधी धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। बताया कि आरोपी को आज यानी मंगलवार को न्यायालय के समक्ष पेश किया जा रहा है।

भाजपा लाख तिरंगा यात्रा निकाल ले पर ट्रंप की घोषणा पर जवाब देना पड़ेगा

देहरादून । ऑपरेशन सिंदूर के नाम पर भारतीय जनता पार्टी द्वारा घोषित तिरंगा यात्रा पर प्रतिक्रिया देते हुए उत्तराखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष संगठन व प्रशासन सूर्यकांत धस्माना ने कहा कि कांग्रेस ने सेना का मनोबल बढ़ाने व उनके प्रति अपना पूर्ण समर्थन प्रदर्शित करने के लिए पूरे देश में तिरंगा यात्रा तब निकाली जब देश की सेना दुश्मनों से सीमा पार व सीमा पर लोहा ले रही थी और लाखों कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने उत्तराखंड की राजधानी देहरादून समेत पूरे देश के अलग अलग हिस्सों में इस प्रकार की तिरंगा जय हिंद यात्रा निकाल कर अपना राष्ट्रीय कर्तव्य निभाया अब भाजपा वोट की खातिर ऑपरेशन सिंदूर की सफलता को भुनाने के लिए कल से तिरंगा यात्रा निकाल रही है इस पर कांग्रेस को कोई ऐतराज नहीं है किन्तु कांग्रेस का यह कहना है कि तिरंगा यात्रा निकालने से पहले भारतीय जनता पार्टी को व देश के प्रधानमंत्री को देश की जनता के मन में जो सबसे बड़ा सवाल आज पैदा हो गया है उसका उत्तर देना चाहिए कि भारत की सुरक्षा आत्मरक्षा और संप्रभुता का निर्णय अमरीका को करने का अधिकार किसने दिया ? प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में पत्रकारों से बातचीत करते हुए श्री धस्माना ने कहा कि जब से भारत पाकिस्तान के संक्षिप्त युद्ध के सीजफायर का ऐलान अमरीका के राष्ट्रपति डोनल्ड ट्रंप ने किया और फिर लगातार वो भारत पाकिस्तान के बीच कश्मीर मुद्दे पर मध्यस्ता और सोमवार को रात्रि आठ बजे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के के राष्ट्र के नाम संबोधन से पूर्व दुनिया के नाम अमरीका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का संबोधन जिसमें वो स्पष्ट रूप से कह रहे हैं कि उन्होंने डांट डपट कर और धमका कर भारत पाकिस्तान का युद्धविराम करवाया इन तीनों वक्तव्यों पर देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी को व भारतीय जनता पार्टी को देश की जनता को बताना होगा कि हमारे देश की रक्षा व्यापार और विदेश नीति को कौन चला रहा है भारत या अमरीकी राष्ट्रपति? श्री धस्माना ने कहा कि यह अत्यंत महत्वपूर्ण व राष्ट्रीय सुरक्षा व राष्ट्र की अस्मिता व सम्मान से जुड़ा प्रश्न है जिसका जवाब हर हाल में देश जानना चाहता है। श्री धस्माना ने कहा कि वोट के लिए सेना का व शहीदों का इस्तेमाल करना मोदी जी व भाजपा की पुरानी प्रवृति है किन्तु इस बार जिन परिस्थितियों में सीजफायर की घोषणा हुई है और कश्मीर मुद्दे का अंतरराष्ट्रीयकरण हुआ है यह अकल्पनीय व अविश्वस्नीय है और क्या इसमें भारत के प्रधानमंत्री की सहमति है इसका स्पष्टीकरण भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी को स्वयं आगे आ कर देना पड़ेगा।

याचना नहीं अब रण होगा

डॉ घनश्याम बादल

पहलगाम की सैबरन घाटी में हुई नृशंस हत्याकांड के बाद जैसी आशंका थी भारत-पाक के बीच युद्ध के बादल मंडरा रहे हैं ।

जिस तरह से कश्मीर में पाकिस्तान संरक्षित आतंकवादियों ने 26 निर्दोष पर्यटकों का कत्ल किया, उससे साफ ज़ाहिर था या तो पूर्व की सरकारों की तरह यह सरकार भी चुपचाप इस ज़हर के घूंट को पी जाए या फिर आगे बढ़कर जवाब दिया जाए ।

इससे पूर्व भी जब नरेंद्र मोदी नीत सरकार के कार्यकाल में आतंकवादियों ने भारत में आतंकी हमला किया तब दोनों बार ही उन्हें जबरदस्त मुंह तोड़ जवाब दिया गया लेकिन शायद पड़ोसी देश इस बात को भूल गया और उसने इस बात का फ़ायदा उठाने की नीयत से एक बार फिर आतंकवाद का सहारा लिया कि धारा 370 हटाने के बाद शायद कश्मीरी उसकी इन नापाक हरकतों को अपना समर्थन देंगे। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। सुरक्षा बल एवं दूसरी एजेंसियां लगातार एक्शन में है लेकिन कहीं पर भी इनका न तो विरोध हुआ है न ही पहले की तरह की पत्थर बाजी हुई बल्कि कश्मीर की सरकार, वहां के मुख्यमंत्री एवं आम जनता ने आगे बढ़कर भारत का समर्थन किया है। साथ ही साथ सरकार ने पाकिस्तान को घेरने का कार्य ठीक उसी दिन शुरू कर दिया था जिस दिन पहलगाम की सुंदर वादियों में पर्यटकों पर हमला हुआ। प्रधानमंत्री अरब की अपनी यात्रा को बीच में ही छोड़कर तुरंत वापस आए, उच्च स्तरीय बैठकें आयोजित की गई और तुरंत ही पाकिस्तान पर एक जबरदस्त कूटनीतिक स्ट्राइक कर दी गई जो पहले तो वहां के नेताओं और सेना समझ में ही नहीं आई और बाद में उन्होंने पहले की तरह ही एटम बम की गीदड़ भभकी के साथ जवाब देना शुरू किया लेकिन भारत की ओर से शांत भाव के साथ कड़ी कार्रवाई जारी रही । आज

पाकिस्तान के साथ लगभग सारे कूटनीतिक संबंध खत्म कर दिए गए हैं वहां के दूतावास के सदस्यों की संख्या घटा दी गई, आवा-जाही पर रोक लगा दी गई और भारत में रह रहे पाकिस्तानी नागरिकों को भी तुरंत ही देश छोड़ने का सुझाव एवं हुकुम दोनों दे दिए गए । बाघा बॉर्डर भी बंद कर दिया गया है लेकिन सबसे बड़ा हमला किया गया सिंधु घाटी के नदी समझौते को स्थगित करके । अब क्योंकि भारत में इस संधि से खुद को अलग कर लिया है तो यह संधि अंतरराष्ट्रीय संधि रह ही नहीं गई है इसलिए उसे पाकिस्तान को किसी भी तरीके की सूचना देने की ज़रूरत नहीं है । वह जब चाहे सिंधु, झेलम, चिनाब, रावी,ब्यास और सतलुज नदियों के पानी की आपूर्ति पाकिस्तान को बंद कर सकता है तथा कब वह पानी का प्रवाह बढ़ा रहा है एवं कब घटा रहा है इसके बारे में भी उसे पाकिस्तान को सूचित करने की ज़रूरत नहीं है । इसका सीधा सा मतलब यह है कि आने वाली गर्मियों में पाकिस्तान को प्यासा मरना पड़ेगा और वहां की कृषि एवं उद्योग की अर्थव्यवस्था पर भी इसका भारी विपरीत प्रभाव पड़ना तय है। इतना ही नहीं भारत के वायु क्षेत्र को पाकिस्तान के लिए बंद कर दिया गया है । जिसका मतलब है अब पाकिस्तान के युद्ध विमान के साथ-साथ यात्री वायुयानों को भी लंबा रास्ता तय करके जाना पड़ेगा और इससे उनका खर्च बढ़ेगा जिससे उसकी अर्थव्यवस्था की हालत खराब होनी निश्चित है। सोशल मीडिया के पाकिस्तान परस्त सारे चैनलों एवं अकाउंट्स पर रोक लगा दी गई है, पाकिस्तान के साथ आयात निर्यात एवं व्यापार लगभग खत्म कर दिया गया है । और दुनिया भर के देशों के साथ भारत के प्रधानमंत्री, रक्षा मंत्री, विदेश मंत्री एवं दूसरे सैन्य अधिकारी तथा मंत्री निरंतर संपर्क में रहकर उन्हें पाकिस्तान कई आतंकवादी कृत्यों में संलिप्तता की जानकारी और सबूत दे रहे हैं यानी हमारी रणनीति साफ है कि इस आतंकवादी देश को दुनिया में अलग-थलग करके रख दिया जाए । हालांकि तुर्कीए, यमन एवं चीन जैसे कुछ देश पाकिस्तान के साथ खड़े भी नजर आते हैं लेकिन दुनिया भर के अधिकांश देश भारत के ही साथ हैं। खैर कौन साथ है और कौन ख़िलाफ़ इसका पता तो तभी चलेगा जब दोनों देशों के बीच प्रत्यक्ष युद्ध की घोषणा होती है जिसके लिए सारा देश बड़ा बेचैन हो रहा है । हालांकि युद्ध किसी भी समस्या का हल नहीं है और युद्ध का विपरीत प्रभाव केवल एक ही पक्ष पर नहीं पड़ने वाला है और यदि दुर्भाग्य से परमाणु हथियारों का उपयोग हो गया तो फिर उसका प्रभाव केवल भारत-पाकिस्तान या एशिया तक ही सीमित नहीं रहेगा अपितु विश्व के बहुत बड़े हिस्से में इसके विकिरण से बड़ी तबाही मचाने के संकेत है । उम्मीद करें कि ऐसी स्थिति नहीं आएगी ।

होना तो यह चाहिए था कि पाकिस्तान को आतंकवादियों की पीठ पर रखे अपने हाथ को तुरंत हटा लेना था और उन्हें भारत के हवाले करके सजा भुगतने के लिए छोड़ देना था लेकिन अपनी आदत के अनुसार उसने ऐसा नहीं किया जबकि लादेन को पाकिस्तान में छुपा कर उसके साथ क्या हुआ था इसका उदाहरण उसके सामने है । पाकिस्तान के संदर्भ में मज़े की बात यह है कि वह अपने सैनिकों या नागरिकों को जिंदा या मुर्दा हालत में भी स्वीकार तक नहीं करता है लेकिन दहशतगर्दो से उसका अथाह प्रेम जग जाहिर है। फिलहाल इस देश की हालत यह है कि 'घर में नहीं दाने और अम्मा चली भुनाने' । नागरिकों के लिए जरूरी सुविधाएं मुहैया नहीं हैं ,आटे के लिए वहां लूट मचती, है महंगाई आकाश छू रही है और देश के बड़े हिस्से में सरकार के प्रति भारी गुस्सा ही नहीं अपितु विद्रोह जैसी स्थिति है मगर वह बजाय अपने नागरिकों को एक अच्छा जीवन देने की दहशतगर्द को पालने की मूर्खता कर रहा है।

फिलहाल सबसे बड़ी बात यह है कि भारत और पाकिस्तान दोनों में भारी फर्क है । भारत की अर्थव्यवस्था पाकिस्तान से लगभग दस गुना ज्यादा है, हमारा रक्षा क्षेत्र कहीं अधिक विकसित, आत्मनिर्भर , समर्थ,संपन्न एवं आधुनिक हथियारों से लैस है । दुनिया भर के मंचों में हमारी प्रतिष्ठा अलग है और हम आज विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हैं जो जल्द ही तीसरी अवस्था बनने के लिए मचल रही है । उधर पाकिस्तान की हालत यह है कि उसके पास न पैसा है, न हथियार, न गोला - बारूद और उसकी सेना भी ना उतनी आधुनिक और प्रशिक्षित नहीं है और न ही उतनी समर्पित जितनी भारत की। लेकिन गीदड़ भभकियों से पाकिस्तान फिर भी बाज नहीं आ रहा है ।

22 अप्रैल के बाद भारत ने काफी धैर्य का परिचय दिया है जबकि पाकिस्तान लगातार एलओसी पर युद्ध विराम समझौते का उल्लंघन करते हुए हमारे सैनिकों को उकसा रहा है और इसका मुंहतोड़ जवाब भी उसे मिल रहा है पर वह सबक सीखने को तैयार नहीं है इसलिए अब वह वक्त बहुत नज़दीक है जब उसे सबक सिखाने की अनिवार्यता सामने होगी । इस गोलीबारी या भड़काऊ बयानों के पीछे पाकिस्तान की रणनीति बहुत साफ है वह किसी भी तरह भारत को उकसाकर पहले हमला करने को भड़का रहा है जिससे विश्व के देशों से कह सके कि उस पर हमला भारत ने किया, अब उसकी मदद की जाए। वह यह भूल जाता है कि दुनिया भर के देश उससे पूछेंगे कि पहलगाम, बालाकोट, उड़ी या दूसरे स्थानों पर उसके आतंकवादियों के हमले पर उसका पक्ष क्या है।

आंकड़े एवं प्राप्त सूचनाओं पर गौर करें तो यदि पाकिस्तान को चीन या दूसरे देशों से कोई मदद नहीं मिलती है तो भारत के समक्ष वह एक हफ्ते से अधिक नहीं टिक सकता है और यदि गिने-चुने देश उसको सामने आकर या चोरी छिपे मदद भी करते हैं तब भी उसे भारी नुकसान होना ही है। जो हालात पाकिस्तान के हैं यदि आमने-सामने का युद्ध हुआ तो ऐसे में बलूचिस्तान पाकिस्तान एवं सिंध प्रांत के विद्रोही अपना अवसर तलाश सकते हैं और यदि ऐसा हुआ और जिसके लिए निसंदेह भारतीय कूटनीतिक एवं एजेंसियां सक्रिय हो चुकी होंगी तो फिर एक बार फिर से पाकिस्तान के तीन-चार टुकड़े होने तय हैं।

कश्मीर घाटी के लोग पाकिस्तान के खिलाफ आंदोलित

हरिशंकर व्यास

जम्मू कश्मीर में आतंकवाद पिछले करीब चार दशक से चल रहा है। पिछली सदी में आठवें दशक के मध्य में इसकी शुरुआत हुई थी। उसके बाद करीब 40 साल में कोई मौका ऐसा नहीं आया, जब जम्मू कश्मीर में और खास कर कश्मीर घाटी के स्थानीय निवासियों के मन में पाकिस्तान के प्रति ऐसी नफरत पैदा हुई हो और उसका प्रकटीकरण भी हुआ हो, जितनी पहलगाम की घटना के बाद हुई है। पहली बार ऐसा हुआ है कि कश्मीर घाटी के लोग पाकिस्तान के खिलाफ आंदोलित हुई। अपने हिंदू बिरादरान के साथ खड़े हुए और आतंकवादियों को अपना दुश्मन बताया। इससे पहले किसी न किसी रूप में आतंकवादियों को स्थानीय लोगों का समर्थन मिलता रहता है। वे अपने आर्थिक हितों और अपने जीवन से ज्यादा पाकिस्तान के इस नैरेटिव की लड़ाई लड़ते थे कि, 'कश्मीर उसके गले की नस है'।

पहलगाम में धर्म पूछ कर 27 हिंदुओं की हत्या किए जाने के बाद कश्मीरी आवाम आंदोलित हुआ है। हजारों की संख्या में लोग सडक़ों पर उतरे और उन्होंने पाकिस्तान के खिलाफ नारेबाजी की। ऐसा नहीं है कि कोई पार्टी लोगों को मोबिलाइज कर रही थी। भाजपा ने भी अपनी ओर से कुछ प्रयास नहीं किया, जबकि उसके 29 विधायक हैं और वह एक बड़ी राजनीतिक ताकत है। लोग खुद ब खुद घरों से निकले और पाकिस्तान का विरोध किया। सबने एक स्वर में कहा कि यह हमला कश्मीरियत की भावना के ऊपर है।

जाहिर है इतने बड़े विरोध के पीछे एक कारण यह भी था कि पहली बार आतंकवादियों ने धर्म पूछ कर इतना बड़ा नरसंहार किया था और कश्मीर लोगों को भी इसके असर का अंदाजा होगा। लेकिन उसके साथ साथ एक कारण यह भी था कि आतंकवादियों ने इस अलिखित नियम का उल्लंघन किया था कि पर्यटकों या दूसरे बाहरी लोग, जो स्थानीय अर्थव्यवस्थ को सपोर्ट करते हैं उन पर हमला नहीं होना चाहिए।

पर्यटकों पर हमले का पहला असर तो यह हुआ है कि पर्यटन का हाई सीजन होने के बावजूद सारी बुकिंग रद्द होने लगी है। होटलों की 90 फीसदी बुकिंग रद्द हो गई है। हवाई जहाज की टिकटें कैंसिल की जा रही हैं। लोग श्रीनगर, पहलगाम, गुलमर्ग, सोनमर्ग आदि छोड़िए लोग वैष्णो देवी की यात्रा रद्द कर रहे हैं। सोचें, पिछले साल दो करोड़ 30 लाख पर्यटक कश्मीर गए थे। भारत के कुल 25 करोड़ लोगों ने घरेलू पर्यटन किया, जिसका 10 फीसदी अकेले कश्मीर गया था। इससे कितना राजस्व सरकार को और वहां के कारोबारियों को मिला होगा, इसका अंदाजा लगाया जा सकता है।

पिछले कुछ समय से जम्मू कश्मीर के बारे में धारणा बदली थी और अनुच्छेद 370 हटाए जाने का सकारात्मक असर दिखने लगा था। अनुच्छेद 370 हटाए जाने को जितने सहज रूप से वहां के आम लोगों ने स्वीकार किया और उसके बाद जैसे चुनाव के बाद लोकप्रिय सरकार का गठन हुआ उससे देश भर के लोगों में विश्वास बना और उन्होंने कश्मीर जाना शुरू किया। कश्मीर के लोग भी मुख्यधारा से जुडऩे लगे। वहां के नौजवान देश भर में पढ़ाई के लिए जाने लगे और अचानक अखिल भारतीय सेवाओं से लेकर खेल कूद में कश्मीरी नौजवानों की भागीदारी बढ़ गई।

तभी वहां के स्थानीय कारोबारी, होटल वाले, टैक्सी वाले, खच्चर, घोड़े और डोली वाले सबकी जीविका पर खतरा मंडरा रहा है। कहीं भीड़ पर आतंकवादियों द्वारा गोली चलाना और कुछ लोगों को मार देना, बिल्कुल अलग मामला है लेकिन सबसे लोकप्रिय पर्यटक स्थल पर जाकर पर्यटकों से धर्म पूछ कर उनकी हत्या कर देना, अलग मामला है।

छिड़ी बहस संसद सर्वोच्च है या सुप्रीम कोर्ट?

अजीत द्विवेदी

भारत में एक बार फिर संसद और सुप्रीम कोर्ट की सर्वोच्चता की बहस छिड़ी है। यह बहस कुछ कुछ वैसी ही है जैसे यह बहस कि, 'पहले पेड़ आया या बीज' या 'पहले अंडा आया या मुर्गी'! इस बहस का कभी कुछ हासिल नहीं होने वाला है। फिर भी इस बहस को समय समय पर चलाया जाता है कि संसद सर्वोच्च है या सुप्रीम कोर्ट? पिछले कुछ समय से यह बात ज्यादा सुनने को मिल रही है कि, 'संसद सर्वोच्च है' या 'देश के लोगों ने सांसदों, विधायकों को चुना है सरकार चलाने के लिए तो सुप्रीम कोर्ट को उसमें दखल नहीं देना चाहिए' या 'संसद कानून बनाने लगेगी तो संसद, विधानसभाओं में ताला लगा दिया जाए' या 'अब हमारे पास ऐसे जज हैं, जो सरकार चलाएंगे', आदि, आदि।

सवाल है कि क्या सचमुच न्यायपालिका कानून बना रही है? क्या सचमुच सुप्रीम कोर्ट सरकार को काम नहीं करने दे रहा है और सबसे ऊपर क्या सचमुच संसद सर्वोच्च है और सुप्रीम कोर्ट उसकी सर्वोच्चता का अतिक्रमण कर रहा है? सबसे पहले इस वास्तविकता को समझ लेने की जरुरत है कि भारत में विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका में से कोई सर्वोच्च नहीं है। संविधान ने शक्तियों के पृथक्करण के मॉन्टेस्क्यू के सिद्धांत के आधार पर इन तीनों के बीच शक्तियों का बंटवारा किया है। सबकी जिम्मेदारी तय है और सबको एक दायरे में काम करना है। यह भी ध्यान रखने की बात है कि भारत में संसदीय शासन प्रणाली को अपनाया गया है लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि संसद सर्वोच्च है।

यह शासन की एक व्यवस्था है, जो संविधान पर आधारित है। असल में भारत में संवैधानिक लोकतंत्र को अपनाया गया है, जिसमें संविधान सर्वोच्च है। सभी अंगों को संविधान के हिसाब से काम करना है और संविधान के प्रावधानों की व्याख्या, उसकी मूल भावना के संरक्षण और उसकी सर्वोच्चता को अक्षुण्ण रखने की जिम्मेदारी सुप्रीम कोर्ट को दी गई है।

जिस समय केशवानंद भारती बनाम केरल सरकार के मामले की बहस चल रही थी उस समय देश के सबसे सम्मानित कानूनविदों में से एक ननी पालखीवाला ने संसद की सर्वोच्चता की दलील को खारिज करने के लिए जो कई तर्क दिए थे उनमे से एक यह तर्क यह भी था कि अगर संसद कानून बना कर लोकसभा का कार्यकाल बढ़ा दे तो कोई क्या करेगा? सोचें, अगर संसद में बहुमत वाली पार्टी कानून बना कर लोकसभा का कार्यकाल 20 साल कर दे तो इससे बचने का क्या रास्ता है?

अगर सरकार कहे कि उसे जनता ने चुना है और उसके हाथ में सारी ताकत दी है इसलिए वह संघीय व्यवस्था को खत्म कर रही है या मौलिक अधिकारों को समाप्त कर रही है तो संविधान को इस हमले से बचाने का क्या रास्ता होगा?

भारत के मामले में ऐसी कोई आशंका निर्मूल नहीं है। आखिर इंदिरा गांधी ने इमरजेंसी लगाई थी तो लोकसभा का कार्यकाल छह साल का कर दिया था। ऐसी स्थिति से बचने के लिए ही भारत के संविधान में न्यायिक समीक्षा का प्रावधान रखा गया है। राजनीति शास्त्र और संविधान का अध्ययन करने वालों को पता है कि भारत ने संसदीय प्रणाली ब्रिटेन से अपनाई है लेकिन न्यायिक समीक्षा का प्रावधान अमेरिका से लिया है। भारत में संविधान बनाने वालों ने अनुच्छेद 13, 32, 131, 136, 143, 226 और 246 के तहत न्यायिक समीक्षा का अधिकार सुप्रीम कोर्ट को दिया है।

संविधान निर्माताओं की मंशा पूरी तरह से स्पष्ट है। उन्होंने अनुच्छेद 13 में लिखा कि संसद या विधानसभा से बनाया गया कोई कानून अगर मौलिक अधिकारों के खिलाफ है तो वह अमान्य और अवैध होगा। इसके बाद अनुच्छेद 32 में लिखा कि मौलिक अधिकारों के हनन की स्थिति में कोई भी व्यक्ति सुप्रीम कोर्ट जा सकता है। इसी तरह अनुच्छेद 226 में लिखा है कि मौलिक अधिकार के हनन की स्थिति में कोई व्यक्ति हाई कोर्ट जा सकता है। ऐसे ही अनेक अनुच्छेद हैं, जिनमें कहीं केंद्र व राज्य के विवाद की स्थिति में या संविधान के 'बुनियादी ढांचे' पर हमले की स्थिति में सुप्रीम कोर्ट के दखल देने की व्यवस्था है। संविधान बनाने वालों ने अनुच्छेद 368 के जरिए संसद को यह अधिकार दिया कि समय के साथ अप्रासंगिक होते जाने वाले संवैधानिक प्रावधानों में वह संशोधन करे लेकिन उसे संविधान को नष्ट करने का अधिकार नहीं दिया गया है।

अगर अदालत को लगता है कि संशोधन के नाम पर संविधान को नष्ट करने का प्रयास किया जा रहा है या संवैधानिक प्रावधानों का अनुपालन उनकी मूल भावना के हिसाब से नहीं किया जा रहा है तो वह दखल देकर संविधान की मूल भावना को प्रस्थापित करने का कदम उठा सकती है।

तमिलनाडु के राज्यपाल के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने यही काम किया। यह सही है कि संविधान में इस बात का जिक्र नहीं किया गया है कि विधानसभा से पास किए गए किसी विधेयक को राज्यपाल को कितने समय के अंदर मंजूरी देनी है। लेकिन क्या इसका यह मतलब है कि राज्यपाल अनंतकाल तक विधानसभा से पास विधेयक को बिना मंजूरी दिए अपने पास रख सकते हैं? इसका मतलब तो यह होगा कि राज्यपाल चाहे तो वह किसी सरकार को काम ही नहीं करने दे! वह सरकार के सारे विधेयकों को अपने पास लंबित रखे और कामकाज ठप्प कर दे! इस तरह तो केंद्र सरकार राज्यपालों का इस्तेमाल करके राज्यों की सरकारों को पंगु कर सकती है।

आजादी के बाद लंबे समय तक इस मामले में सुधार की जरुरत नहीं महसूस हुई या सुप्रीम कोर्ट को दखल देने की जरुरत नहीं पड़ी तो उसका कारण यह था कि किसी भी राज्यपाल ने तीन तीन साल तक विधेयक लटका कर नहीं रखे। जब राज्यपालों ने भाजपा विरोधी सरकारों को परेशान करने के लक्षित उद्देश्य से उनके विधेयकों को कई कई बरस तक लंबित रखा तब सुप्रीम कोर्ट को दखल देना पड़ा और विधेयकों की मंजूरी के लिए एक समय सीमा निश्चित करनी पड़ी। जो लोग सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले से नाराज हैं उन्हें पहले इस बात पर सोचना चाहिए कि ऐसी नौबत क्यों आई?

यह भी कहा जा रहा है कि राष्ट्रपति ही सुप्रीम कोर्ट के जजों और चीफ जस्टिस को नियुक्त करता है तो सुप्रीम कोर्ट राष्ट्रपति को कैसे निर्देश दे सकता है कि उसे कितने समय में बिल की मंजूरी देनी चाहिए? यह बहुत बचकाना और नासमझी भरा तर्क है। पहली बात तो यह है कि सुप्रीम कोर्ट ने राष्ट्रपति को निर्देश नहीं दिया है, बल्कि केंद्र सरकार को दिया है क्योंकि संविधान के मुताबिक राष्ट्रपति को केंद्रीय मंत्रिमंडल की सलाह पर ही काम करना होता है। ध्यान रहे राष्ट्रपति केंद्रीय मंत्रिमंडल की सलाह पर ही जजों की नियुक्ति को मंजूरी देता है।

दूसरी बात यह है कि भारत में जो शासन व्यवस्था बनी है उसमें राष्ट्रीय स्तर की सारी वैधानिक, संवैधानिक और कार्यकारी नियुक्तियां केंद्र सरकार के जरिए होती हैं। अमेरिका की तरह किसी भी नियुक्ति को संसद से मंजूरी नहीं लेनी होती है। इसलिए अगर इस तर्क को मानें कि कोई व्यक्ति अप्वाईंटिंग ऑथोरिटी को कैसे चैलेंज कर सकता है तब तो केंद्र सरकार या प्रधानमंत्री, केंद्रीय मंत्रियों आदि के किसी भी काम पर कोई सवाल नहीं उठा सकेगा! मिसाल के तौर पर प्रधानमंत्री की अध्यक्षता वाली समिति चुनाव आयुक्तों और मुख्य चुनाव आयुक्त को चुनती है तो क्या चुनाव के समय चुनाव आयोग उस कमेटी के सदस्यों के किसी भी आचरण पर सवाल नहीं उठा सकता है या उन्हें निर्देश नहीं दे सकता है?

यह सब संविधान की नर्सरी स्तर की पढ़ाई से समझा जा सकता है बाकी मास्टर्स करने के लिए संविधान पढना़ होगा और ऐतिहासिक न्यायिक मामलों के बारे में गहराई से जानना होगा। संविधान के पहले संशोधन के बारे में पढना़ होगा, 24, 25वें और 42 व 44वें संशोधन के बारे में विस्तार से पढना़ होगा। गोलकनाथ बनाम पंजाब सरकार, केशवानंद भारती बनाम केरल सरकार, मिनर्वा मिल्स बनाम भारत सरकार, एडीएम जबलपुर केस आदि के बारे में विस्तार से पढना़ होगा।

बहरहाल, सुप्रीम कोर्ट और उसके चीफ जस्टिस पर किए जा रहे निजी हमले हों या संसद की सर्वोच्चता बताने वाले बयान हों इनका असल मकसद न्यायपालिका नाम की बाधा को रास्ते से दूर करना है। यह पूरी तरह से राजनीतिक मामला है। पहले इंदिरा गांधी की सरकार ने यह काम किया था। आज भाजपा के बहुत से नेता और मीडिया चैनल भी इंदिरा गांधी के बयान सुनवा रहे हैं कि उन्होंने न्यायपालिका और जजों के बारे में क्या क्या कहा है। भाजपा से यह पूछा जाना चाहिए कि इंदिरा गांधी ने जो कहा या किया था वह सही था या गलत?

अगर भाजपा की नजर में वह गलत था तो फिर आज उसकी मिसाल देने या उसी तरह का काम करने की क्या जरुरत है? भारत की संसदीय प्रणाली संविधान के सम्मान के आधार पर काम करती है। समय समय पर हुई बहसों और न्यायिक मामलों से कुछ परंपराएं बनी हैं और कुछ नियम स्थापित हुए हैं। सबको उनका पालन करना चाहिए। अगर सरकार को या भाजपा को लग रहा है कि न्यायपालिका में बहुत कमियां हैं तो उनको ठीक करने की पहल संसद के जरिए करनी चाहिए। सार्वजनिक रूप से न्यायपालिका और जजों को अपमानित करना इसका समाधान नहीं है।

ए आई : भारत को समय के साथ चलना होगा

अशोक शर्मा

फ्रांस के तत्वावधान में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर आयोजित समिट पिछले दिनों राष्ट्रपति मैक्रों के साथ भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सह-अध्यक्षता में संपन्न हुई। यह समय दरअसल,एआई के क्षेत्र में भारत को अपनी प्राथमिकता तय करने का है। हालांकि, समिट में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के संवर्द्धन के रोडमैप पर अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में गहरे मतभेद भी उजागर हुए। मेजबान फ्रांस,भारत व प्रमुख हितधारक चीन समेत दुनिया के साठ देशों ने डिजिटल विभाजन को कम करने के लिये एआई पहुंच को बढ़ावा देने, इसे खुला,समावेशी, पारदर्शी, नैतिक, सुरक्षित और भरोसेमंद बनाने के संकल्प लेते हुए एक संयुक्त बयान पर हस्ताक्षर किए। वहीं अमेरिका और ब्रिटेन ने इस पर असहमति जतायी और हस्ताक्षर नहीं किए। जबकि अमेरिकी उपराष्ट्रपति जे। डी। वेंस ने वैश्विक नेताओं को चेताया कि अत्यधिक विनियमन से तेजी से बढ़ते एआई उद्योग की गति थम सकती है। जो बताता है कि अमेरिका एआई जोखिमों को कम करने के यूरोप के प्रयासों से खुश नहीं है। दरअसल, अमेरिका एआई की अपार संभावनाओं पर वर्चस्व चाहता है। उसे चीन की चुनौती भी स्वीकार नहीं है। इसके विपरीत भारत ने एआई को वैश्विक भलाई के लिये विकसित करने पर बल दिया है। भारत का मानना है कि एआई का उपयोग देश विशेष अपने निजी हितों तक सीमित न रखे। यानी एआई नवाचार को बढ़ावा तो दिया जाना चाहिए, लेकिन इसके नियमन को भी नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए। बहरहाल,बड़े पैमाने पर एआई के दुरुपयोग की आशंका के बीच विश्वास, सुरक्षा और पारदर्शिता बढ़ाने के लिये एक वैश्विक ढांचा स्थापित करना अपरिहार्य ही है।

यही वजह है कि यूरोपीय देशों ने इस दिशा में सतर्क रुख अपनाया है। ताकि जांच और संतुलन बनाने वाले कदमों से दुनिया में डीपफेक व भ्रामक प्रचार पर अंकुश लगाया जा सके। फलतः भविष्य में नियामक मानदंडों को आसान बनाने पर सहमति बनानी जरूरी है। इसके लिये पूरी तरह से दरवाजे खोलना किसी आपदा को आमंत्रण जैसा भी हो सकता है। पेरिस में एक्शन समिट ऐसे वक्त में हुई है जब एआई में अमेरिकी वर्चस्व को चीनी कंपनी डीपसीक जबर्दस्त चुनौती दे चुकी है। उसने कम लागत में बेहतर एआई टूल पेश करके बताया है कि इस दौड़ में चीन कहीं आगे निकल चुका है। निस्संदेह, इस क्षेत्र में तमाम नई खोजों की संभावनाएं बरकरार हैं। लेकिन सुरक्षा मुद्दों को अनदेखा नहीं किया जा सकता। दरअसल, आने वाला समय कृत्रिम बुद्धिमत्ता का है, लेकिन इसका अनियंत्रित विकास मानवता के लिए घातक भी साबित हो सकता है। ऐसे में एआई विकास में पारदर्शिता व नियमन के अंतर्राष्ट्रीय मानक बनाने भी जरूरी हैं। जरूरी है कि हम एआई की वैश्विक चुनौती के बीच अपने इंजीनियरों व वैज्ञानिकों की मेधा का बेहतर उपयोग करके नई खोजों का मार्ग प्रशस्त करें। अन्यथा भारत एआई की नई खोजों की दौड़ में पिछड़ सकता है। फिक्र है कि भारत जैसे बड़ी बेरोजगारी वाले देश में कहीं एआई रोजगार संकट का वाहक न बने।

रूबीना दिलैक का ग्रीन साड़ी में देसी अवतार

टीवी एक्ट्रेस रूबीना दिलैक का फैशन सेंस कमाल का है। उनके स्टाइल के लाखों लोग दीवाने हैं। वह अक्सर सोशल मीडिया पर अपने नए लुक की तस्वीरें शेयर करती रहती हैं। एक्ट्रेस ने अपना लेटेस्ट फोटोशूट इंस्टाग्राम पर शेयर किया है, जिसे देख फैंस अपना दिल हार बैठे हैं। उनका यह फोटोशूट अब सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है।

लेटेस्ट फोटोशूट में रूबीना ग्रीन कलर की साड़ी में नजर आ रही हैं। अपने देसी अंदाज को बेहतरीन बनाने के लिए उन्होंने बालों को खुला रखा है और कानों में हैवी ईयरिंग्स पहने हुए हैं। इन तस्वीरों को शेयर करते हुए उन्होंने कैप्शन में लिखा- इश्क और मुश्क छिपाए नहीं छुपता।

इस लेटेस्ट फोटोशूट पर एक्ट्रेस निशा रावल ने कमेंट किया- हमेशा प्यार बांटती रहो।

एक्ट्रेस आकांक्षा सिंह ने कमेंट में लव इमोजी शेयर किया। वहीं एक यूजर ने कमेंट में लिखा- अनारकली।

इससे पहले उन्होंने ब्राउन कलर के गाउन में अपना फोटोशूट शेयर किया था, जिसमें नेट का दुपट्टा उनकी खूबसूरती में चार चांद लगाने का काम कर रहा था। इन तस?वीरों को शेयर करते हुए रूबीना ने कैप्शन दिया- सुनहरी धूप ने कुछ इस तरह से छुआ... बता दें कि रुबीना दिलैक ने मिस शिमला समेत कई ब्यूटी कॉन्टेस्ट में अवॉर्ड्स अपने नाम किए हैं। एक्ट्रेस बनने से पहले वह आईएएस अधिकारी बनना चाहती थीं। इसके लिए वह चंडीगढ़ में तैयारी भी कर रही थीं। इस दौरान अपनी एक फ्रेंड के कहने पर उन्होंने छोटी बहू सीरियल के लिए ऑडिशन दिया और सेलेक्ट हो गईं। यहां से उन्होंने एक्टिंग में जाने का फैसला किया और सीरियल में राधिका का रोल निभाया। इसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। वह सास बिना ससुराल, पुनर्विवाह-एक नई उम्मीद, जीनी और जूजू और शक्ति जैसे हिट शो का हिस्सा रही हैं। उन्होंने राजपाल यादव स्टारर फिल्म अर्ध से बॉलीवुड में डेब्यू किया। वह बिग बॉस 16 की विनर भी रही हैं।

सैफ अली खान की ज्वेल थीफ के सीक्वल का ऐलान, शीर्षक से भी उठा पर्दा

अभिनेता सैफ अली खान पिछले लंबे समय से फिल्म ज्वेल थीफ- द हीस्ट बिगिन्स को लेकर सुर्खियां बटोर रहे हैं। उनकी यह फिल्म आज यानी 25 अप्रैल को ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स पर दस्तक दे चुकी है।

सैफ के साथ इस फिल्म में जयदीप अहलावत भी मुख्य भूमिका में नजर आ रहे हैं। फिल्म की कहानी और सैफ-जयदीप को दर्शकों की तरफ से हरी झंडी मिली है।

अब निर्माताओं ने ज्वेल थीफ के सीक्वल का ऐलान कर दिया है।

ज्वेल थीफ के अंत में निर्माताओं ने फिल्म की दूसरी किस्त की घोषणा कर दी है। फिल्म के सीक्वल का नाम ज्वेल थीफ- द हीस्ट कंटीन्यूज रखा गया है। पहले भाग की तरह दूसरे भाग में भी सैफ का सामना रणदीप से होगा। रिपोर्ट्स की मानें तो दोनों अपने-अपने किरदारों को दोहराते हुए नजर आएंगे।

गौरतलब है कि ज्वेल थीफ- द हीस्ट कंटीन्यूज भी नेटफ्लिक्स पर ही रिलीज होगी। फिलहाल इसकी रिलीज तारीख सामने नहीं आई है।

सैफ और रणदीप के अलावा फिल्म ज्वेल थीफ में कुणाल कपूर और

निकिता दत्ता जैसे सितारों ने भी अपनी अदाकारी का तडक़ा लगाया है।

फिल्म में सैफ ने रेहान रॉय की भूमिका निभाई है, जो एक चोर है।

इस फिल्म के निर्देशन की कमान कुकी गुलाटी और रॉबी ग्रेवाल ने संभाली है, वहीं सिद्धार्थ आनंद फिल्म के निर्माता हैं।

दूसरे भाग का निर्देशन भी गुलाटी और ग्रेवाल ही करने वाले हैं। फिल्म के निर्माता भी सिद्धार्थ ही होंगे।

रेड ड्रेस में कहर ढा रहीं भोजपुरी स्टार आकांक्षा पुरी

भोजपुरी सिनेमा की ग्लैमरस एक्ट्रेस आकांक्षा पुरी ने एक बार फिर अपने स्टाइल से फैंस का दिल जीत लिया है. उन्होंने हाल ही में अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक बोल्ड और स्टनिंग फोटोशूट की तस्वीरें शेयर की हैं, जिसमें वह रेड कलर के खूबसूरत आउटफिट में नजर आ रही हैं. इस ऑफ-शोल्डर रेड क्रॉप टॉप और मैचिंग स्कर्ट लुक में आकांक्षा बेहद दिलकश लग रही हैं. हेवी ईयररिंग्स, गोल्डन एक्सेसरीज़ और ओपन हेयर स्टाइल ने उनके लुक को और भी शाइनी बना दिया है. कैप्शन में आकांक्षा ने लिखा, रात का स्वामित्व और साथ में शैली, पहनावा, आकांक्षापुरी जैसे कई हैशटैग इस्तेमाल किए.

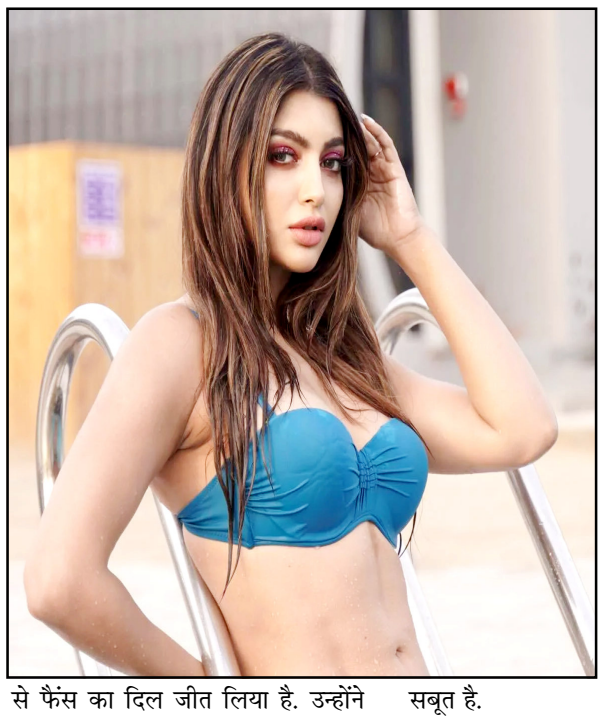

उनकी इन तस्वीरों को अब तक 40 हजार से ज्यादा लाइक्स मिल चुके हैं. कई सेलेब्स और फैंस ने कमेंट करते हुए फायर और दिल के इमोजी से उनके लुक की तारीफ की है. राखी सावंत ने भी कमेंट किया, फायर, जो इस लुक की तारीफ का साफ सबूत है.

गौरतलब है कि आकांक्षा पुरी न सिर्फ अपनी एक्टिंग बल्कि अपने फैशन सेंस को लेकर भी चर्चा में रहती हैं. वह सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव हैं और फैंस के साथ लगातार जुड़े रहने का हुनर रखती हैं. उनका यह लेटेस्ट लुक यह साबित करता है कि वह हर इवेंट को अपने स्टाइल से 'अपना' करना जानती हैं.

खौफनाक जंगल में नंगे पांव दौड़ीं तमन्ना भाटिया, सिद्धार्थ मल्होत्रा की वन: फोर्स ऑफ द फॉरेस्ट में एक्ट्रेस की एंट्री

तमन्ना भाटिया सिद्धार्थ मल्होत्रा की अपकमिंग माइथोलॉजिकल थ्रिलर, वन-फोर्स ऑफ द फॉरेस्ट में शामिल हो गई हैं. बुधवार को फिल्म के मेकर्स ने एक्ट्रेस की थ्रिलर एंट्री दिखाते हुए नया टीजर रिलीज किया है. क्लिप में, तमन्ना का चेहरा दिखाई नहीं दे रहा था. हालांकि, वह लाल साड़ी में नंगे पैर जंगल की ओर भागती हुई दिखाई दे रही थीं.

तमन्ना भाटिया टीजर में एक कार से उतरती हैं और जंगल की ओर नंगे पांव भागती हैं. वह टीजर में एक दीया भी जलाती हैं और एक बोर्ड पर आती हैं, जिस पर लिखा है, चेतावनी- सूर्यास्त के बाद जंगल में प्रवेश करने की अनुमति नहीं है. टीजर को सोशल मीडिया पर शेयर करते हुए बालाजी मोशन पिक्चर्स ने लिखा, भारतीय माइथोलॉजिकल कथाओं और रहस्य से भरे वन-फोर्स ऑफ द फॉरेस्ट इतिहास और लोककथाओं के पन्नों से सीधे एक कहानी को सामने लाता है. इस शक्तिशाली कहानी में तमन्ना भाटिया का स्वागत करते हुए खुशी हो रही है. अपने आप में एक शक्ति, जो पहले कभी नहीं देखी गई स्क्रीन पर कमान संभालने के लिए तैयार है.

दिलचस्प बात यह है कि वन-फोर्स ऑफ द फॉरेस्ट में तमन्ना भाटिया और सिद्धार्थ मल्होत्रा पहली बार एक साथ काम करेंगे. इसलिए फैंस उनकी ऑन-स्क्रीन जोड़ी और केमिस्ट्री देखने के लिए एक्साइटेड हैं. यह फिल्म एक लोक थ्रिलर है जिसे दीपक कुमार मिश्रा को-डायरेक्ट कर रहे हैं जो पंचायत के निर्देशक भी हैं. फिल्म के इस साल जून में फ्लोर पर आने की उम्मीद है और यह 2026 में सिनेमाघरों में रिलीज होगी.

इस बीच तमन्ना की आने वाली फिल्मों में रेंजर, राकेश मारिया की बायोपिक और मोस्ट अवेटेड सीक्वल नो एंट्री 2 शामिल हैं. दूसरी ओर, सिद्धार्थ मल्होत्रा फिलहाल जान्हवी कपूर के साथ परम सुंदरी पर काम कर रहे हैं. वह राज शांडिल्य के अगले प्रोजेक्ट का भी हिस्सा हैं और करण जौहर के बैनर तले रेस 4 और निर्देशक शरण शर्मा के साथ एक और अनटाइटल्ड फिल्म के लिए बातचीत कर रहे हैं.

गर्मियों के दौरान फूल वाले पौधों का इस तरह से रखें ध्यान, रहेंगे स्वस्थ

गर्मियों में बढ़ती गर्मी कई तरह की समस्याएं उत्पन्न कर सकती है। इनमें से एक है फूलों वाले पौधों का मुरझाना।

अगर आप अपने बगीचे में फूलों वाले पौधे लगाते हैं तो आपको उनकी देखभाल के लिए अतिरिक्त सावधानी बरतनी चाहिए। ऐसा न करने पर फूलों वाले पौधे मुरझा सकते हैं।

आइए आज हम आपको कुछ ऐसी टिप्स देते हैं, जिनसे आप गर्मियों के दौरान अपने फूलों वाले पौधों का अच्छे से ध्यान रख सकते हैं।

पौधों में छाया की व्यवस्था करें

गर्मियों में सूरज की रोशनी काफी तेज होती है, जो कई बार फूलों वाले पौधों के लिए हानिकारक हो सकती है। इससे बचाने के लिए अपने फूलों वाले पौधों को ऐसी जगह पर रखें, जहां उन्हें सुबह की हल्की धूप और दोपहर की तेज धूप से बचाव मिल सके।

आप चाहें तो पौधों को किसी पेड़ के नीचे या फिर छत पर कपड़े या छांव देने वाले तिरपाल से ढक सकते हैं।

पौधों को पर्याप्त पानी देना है जरूरी

गर्मियों में फूलों वाले पौधों को पर्याप्त पानी देना बहुत जरूरी है।

हालांकि, ध्यान रखें कि अधिक पानी से भी फूलों वाले पौधों को नुकसान पहुंच सकता है। इससे जड़ें खराब हो सकती हैं। इसलिए इन्हें बस तभी पानी दें जब इनमें मिट्टी सूखी लगे।

इसके अलावा पौधों को सुबह के समय पानी दें क्योंकि इस समय मिट्टी ठंडी रहती है, जिससे पौधों पर पानी का नकारात्मक असर नहीं पड़ता।

खाद का करें उपयोग

फूलों वाले पौधों को सही पोषण देने के लिए उन्हें समय-समय पर खाद दें।

इसके लिए आप प्राकृतिक खाद का इस्तेमाल कर सकते हैं। इससे मिट्टी की गुणवत्ता सुधरेगी और पौधे स्वस्थ रहेंगे।

आप चाहें तो अपने फूलों वाले पौधों को पोषण देने के लिए गोबर की खाद या फिर हरी खाद का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। यह खाद पौधों को जरूरी तत्व प्रदान करने के साथ-साथ उन्हें कीटों से सुरक्षित रखने में भी मदद कर सकती है।

नियमित रूप से छंटाई करें

फूलों वाले पौधों की नियमित छंटाई करना जरूरी है क्योंकि इससे पौधों का विकास ठीक रहता है।

इसके अलावा इससे नए पत्ते और फूल आने की संभावना बढ़ जाती है। छंटाई करने के लिए सबसे पहले सूखे और मुरझाए पत्तों और फूलों को काट दें।

इसके बाद पौधों की लंबी शाखाओं को भी काटें ताकि नए पत्ते और फूल अच्छे से आ सकें। इस प्रक्रिया से पौधे को ताजा और स्वस्थ रखने में मदद मिलती है।

कीटों की जांच करें

फूलों वाले पौधों पर कीड़े लगना एक आम समस्या है, खासकर गर्मियों के दौरान।

कीड़े पौधों को कमजोर कर सकते हैं और उनकी वृद्धि को रोक सकते हैं। इसलिए समय-समय पर अपने पौधों की जांच करते रहें।

अगर आपको किसी पौधे पर कीड़े दिखाई दें तो साबुन के पानी का छिडक़ाव करें। इससे कीड़े मर जाएंगे और पौधा सुरक्षित रहेगा। इस तरह आप अपने फूलों वाले पौधों को स्वस्थ रख सकते हैं।

खराब होने के बाद भी क्यों नहीं लगते हैं केले में कीड़े

केला सेहत के लिए बेहद फायदेमंद होता है. केला ना केवल खाने में स्वादिष्ट होता है, बल्कि इसमें कई पोषक तत्व होते हैं. रोजाना केला खाने से शरीर की कई समस्याओं से छुटकारा पाया जा सकता है.

केले की वैरायटी= दुनियाभर में केले की करीब 1000 से ज्यादा वैरायटी पाई जाती है. भारत में केले की करीब 33 किस्में उगाई जाती है. इसमें कई केले की किस्में बेहद स्वादिष्ट होती है. 12 किस्में अपने अलग-अलग साइज और कलर के लिए फेमस है.

केले में क्यों नहीं लगते कीड़े = हर किसी ने देखा ही होगा कि केले में कीड़े नहीं लगते हैं. इसका कारण यह के केले के फल में साइनाइड नाम का केमिकल पाया जाता है. इस कारण इस फल में कीड़े नहीं लग सकते हैं. इसके अलावा केले में भारी मात्रा में विटामिन बी 6, विटामिन सी, पोटेशियम आदि पोषक तत्व पाए जाते हैं. यह शरीर को फिट और चुस्त और हेल्दी रखने में मदद करता है.

केले खाने के फायदे= दिल के लिए फायदेमंद

केले में मौजूद पोटैशियम ब्लड प्रेशर को नियंत्रित करने में मदद करता है, जिससे दिल के रोगों का खतरा कम होता है.

वजन कंट्रोल= केले में फाइबर होता है. जिससे की लंबे टाइम तक पेट भरा हुआ महसूस होता है. जिससे की आपको ज्यादा भूख नहीं लगती हैं और वजन भी कंट्रोल रहता है.

स्किन के लिए- केले में विटामिन सी होता है जो कि स्किन के लिए फायदेमंद होता है और उसको स्वस्थ रखने में भी मदद करता है.

डाइजेशन के लिए= केले में फाइबर होता है जो कि डाइजेशन के लिए बेस्ट होता है और उसे हेल्दी रखने में मदद करता है और कब्ज की दिक्कत से भी बचाता है.

मांसपेशियों के लिए= केले में पोटैशियम और मैग्निशियम होते हैं जो कि मांसपेशियों के लिए फायदेमंद होता है.

मूड को ठीक= केले में विटामिन बी6 होता है जो कि मेंटल हेल्थ में सुधार लाता है और मूड को ठीक रखने में मदद करता है.

आंखों के लिए= केले में मौजूद विटामिन ए आंखों के लिए फायदेमंद होता है.

कैसे खाएं केले= आप दिन के किसी भी समय केला खा सकते हैं. इसे नाश्ते में, दोपहर के खाने के रूप में या स्नैक्स के रूप में खा सकते हैं. आप इसे अकेले खा सकते हैं या दही, पीनट बटर या खाने के कुछ समय बाद खा सकते हैं.

एक दिन में कितने खाएं केले= आप एक दिन में एक से दो केले खा सकते हैं. हालांकि, अगर आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं, तो डॉक्टर से सलाह लेना बेहतर होगा.

घर पर मस्कारा बनाने के लिए अपनाएं ये आसान तरीके

मस्कारा आंखों के मेकअप के लिए काम आने वाले सौंदर्य उत्पादों में सबसे अधिक इस्तेमाल किया जाता है। इससे पलकों को घना और लंबा दिखाने में बड़ी मदद मिलती है। वैसे तो आजकल बाजार में कई तरह के मस्कारे मौजूद हैं, लेकिन उनमें से अधिकतर पलकों और आंखों को नुकसान पहुंचाने वाले केमिकल्स से बने होते हैं। ऐसे में आइए आज हम आपको घर पर विभिन्न तरह के मस्कारे बनाने के आसान तरीके बताते हैं।

क्लियर मस्कारा बनाने का तरीका

क्लियर मस्कारा नो मेकअप लुक के लिए एकदम सटीक उत्पाद है। यह मस्कारा लंबे समय तक चलता है और पलकों टूटने से भी रोकता है। इसे बनाने के लिए कंटेनर में एक बड़ी चम्मच बादाम तेल, नारियल तेल और एक तिहाई चम्मच एलोवेरा जेल मिलाएं। अब इसमें एक तिहाई चम्मच पिघली हुई बीजवैक्स डालकर अच्छी तरह से मिलाएं। अब आपका क्लियर मस्कारा इस्तेमाल के लिए तैयार है।

वॉटरप्रूफ मस्कारा कैसे बनाएं?

सबसे पहले धीमी आंच पर दो चम्मच नारियल तेल पिघलाएं और फिर इसमें चार चम्मच एलोवेरा जेल के साथ कद्दूकस की हुई बीजवैक्स भी मिलाएं। इसके बाद मिश्रण में थोड़ा एक्टिवेटेड चारकोल (ब्लैक मस्कारा के लिए) या कोको पाउडर (ब्राउन मस्कारा) मिलाकर इसे ठंडा होने के लिए छोड़ दें। अंत में इस मस्कारे को एक कंटेनर में स्टोर करें और जरूरत के समय इस्तेमाल करें।

विटामिन- ई वाला मस्कारा

सबसे पहले धीमी आंच पर एक सॉस पैन में दो बड़ी चम्मच एलोवेरा जेल को थोड़े डिस्टिल्ड वॉटर और विटामिन-श्र तेल की दो-तीन बूंदें डालकर अच्छे से मिलाएं। अब इस मिश्रण को ठंडा करके स्टेरेलाइज्ड कंटेनर या मस्कारा ट्यूब में डालें और इस्तेमाल करें। अगर आप नीले, बैंगनी या भूरे रंग का मस्कारा चाहते हैं तो आप इस मिश्रण में अपनी पसंद का कलर पिगमेंट भी मिला सकते हैं।

नारियल तेल का मस्कारा

सबसे पहले डबल बॉयलर तकीनक से एक बड़ी चम्मच नारियल तेल और एक छोटी चम्मच बीजवैक्स डालकर अच्छे से मिलाएं। जब यह मिश्रण पिघल जाए तो इसमें एक कैप्सूल एक्टिवेटेड चारकोल डालकर अच्छी तरह मिलाएं। अब इस मिश्रण को ठंडा होने दें और मस्कारा को एक साफ कंटेनर में स्टोर करें। ध्यान रखें कि यह मस्कारा हल्का होता है, इसलिए इसकी दो-तीन लेयर लगाएं।

बंद हो गई है नाक तो आपके काम आएँगे ये घरेलू नुस्खे

नाक बंद होने की समस्या सामान्य है। जी हाँ, और सबसे अधिक वह लोग परेशान होते हैं जिन लोगों को एलर्जी की समस्या है या जिन लोगों की इम्यूनिटी कमजोर रहती है। बदलते मौसम में नाक बंद होने की समस्या ऐसे लोगों को काफी परेशान करती है। इस अवस्था में अक्सर लोग नोजल ड्रॉप का इस्तेमाल करते हैं या दवाओं का सहारा लेते हैं। हालाँकि स्टाइलक्रेज के मुताबिक, इन दवाओं का अधिक इस्तेमाल सेहत के लिए और भी नुकसानदायक हो सकता है। ऐसे में आप कुछ घरेलू नुस्खों की मदद से इनको ठीक कर सकते हैं। आइए बताते हैं आपको इनके बारे में।

बंद नाक को खोलने के घरेलू उपाय-

गर्म पानी से लें सेक- एक कटोरी में गर्म पानी लें और इसमें माइक्रो फाइबर टॉवल या रुमाल डालकर निचोड़ लें। उसके बाद इस रुमाल को नाक और चेहरे पर रखें। ऐसा 3 से 4 बार करें।

एप्पल साइडर विनेगर का इस्तेमाल- पानी गर्म करें और इसमें एक चम्मच एप्पल साइडर विनेगर डालें। उसके बाद इसे मिलाकर पी लें। ऐसा दिन में दो बार करें। इस विनेगर में एसेटिक एसिड और पोटैशियम होता है जो बंद नाक को खोलने, म्यूकस को निकालने और इंफेक्शन को दूर करने में मदद करता है।

पिपरमिंट टी पिएं- एक कप में गर्म पानी में पिपरमिंट यानी पुदीना के कुछ पत्ते डालें। उसके बाद इसको ढककर 5 से 10 मिनट तक कम आंच पर उबाल लें। इसे दिन में दो बार पियें।

यूकेलिप्टस ऑयलसे लें स्टीम- एक लीटर पानी को उबालें और इसमें यूकेलिप्टस ऑयल की कुछ बूंद डाल लें। उसके बाद इससे चेहरे को तौलिये से ढंक कर स्टीम लें और गहरी सांस लें। 2 से 3 मिनट में आप आराम महसूस करेंगे।

नमक वाले पानी का इस्तेमाल- एक गलास डिस्टिल्ड वॉटर लें और इसमें आधा चम्मच नमक डाल लें।

आंगनबाड़ी और सहायिकाओं को नियुक्ति पत्र 20 मई से : रेखा आर्या

देहरादून। प्रदेश के ग्रामीण इलाकों में 7000 से ज्यादा आंगनबाड़ी और सहायिकाओं को 20 मई से नियुक्ति पत्र मिलने जा रहे हैं। विभाग ने ज्यादातर पदों के लिए अनअंतिम सूची जारी कर दी है। शुक्रवार को आयोजित समीक्षा बैठक में कैबिनेट मंत्री रेखा आर्या ने जल्द से जल्द अंतिम सूची जारी करने के निर्देश दिए हैं। शुक्रवार को विधानसभा भवन स्थित सभागार में आयोजित समीक्षा बैठक में महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास मंत्री रेखा आर्या ने आंगनवाड़ी नियुक्ति प्रक्रिया की समीक्षा की।

रेखा आर्या ने बताया कि हरिद्वार के अलावा 12 जनपदों की अनअंतिम चयन सूची जारी की जा चुकी है और हरिद्वार की अनअंतिम चयन सूची इस सप्ताह जारी हो जाएगी। कैबिनेट मंत्री रेखा आर्या ने अधिकारियों से कहा कि सूची पर जल्द से जल्द आपत्तियां मंगाई जाए और उनका निस्तारण तय समय सीमा में किया जाए।

बैठक के बाद कैबिनेट मंत्री रेखा आर्या ने बताया कि 20 मई से नियुक्ति पत्र प्रदान किए जाएंगे ।नियुक्ति पत्र प्रदान करने के लिए जिलावार कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा।

बैठक में कैबिनेट मंत्री रेखा आर्या ने मुख्यमंत्री जच्चा बच्चा शुभ जीवन योजना की भी समीक्षा की। उन्होंने कहा कि इस योजना के तहत प्रदेश की महिलाओं के गर्भ धारण करने के बाद से अगले 1000 दिन तक उनकी स्वास्थ्य देखभाल, पोषण और संतान उत्पत्ति के बाद बच्चों के लालन पालन में सहायता सुनिश्चित की जाए। मंत्री ने इस योजना को अंतिम रूप देकर जल्द से जल्द कैबिनेट से पारित कराने के निर्देश दिए हैं।

बैठक में मुख्यमंत्री एकल महिला स्वरोजगार योजना में जरूरी संशोधन कर उसे भी कैबिनेट से जल्द पारित कराने के निर्देश दिए गए। इस योजना में एकल महिलाओं को रोजगार के लिए डेढ़ लाख रुपए तक की सब्सिडी जानी है।

बैठक में सचिव चंद्रेश कुमार, निर्देशक प्रशांत आर्य, उप निदेशक विक्रम सिंह, आरके बलोदी, मोहित चौधरी व अन्य विभागीय अधिकारी मौजूद रहे।

महिला कल्याण कोष से मिलेगी तुरंत राहत

बैठक में महिला कल्याण कोष और मुख्यमंत्री महिला एवं बाल बहुमुखी सहायता निधि योजना पर भी चर्चा की गई । कैबिनेट मंत्री रेखा आर्या ने बताया कि इस योजना का संचालन आबकारी विभाग द्वारा लगाए गए सेस से प्राप्त धन से किया जाएगा। उन्होंने बताया कि इस योजना के तहत आपदा, हादसा होने या किसी बच्चे के अनाथ होने समेत, दिव्यांग बच्चों व् महिलाओं को किसी संकट और परेशानी के समय त्वरित आर्थिक सहायता दी जाएगी। इसके तहत जरूरत के अनुसार 5000 से 25000 की सहायता राशि आवेदन के एक सप्ताह के भीतर देना सुनिश्चित किया जाएगा।

अब ग्रेजुएशन के बाद भी मिलेगा नंदा गौरा योजना के तहत पैसा

राज्य में संचालित नंदा गौरा योजना के तहत फिलहाल 12वीं पास करने के उपरांत ग्रेजुएशन में एडमिशन ले लेने के समय पात्र बालिकाओं को 51 हजार रुपए की धनराशि दी जाती है। जल्द ही इस योजना के तहत ग्रेजुएशन या 12वीं के बाद कोई स्किल बेस्ड कोर्स पूरा करने पर भी सहायता राशि दी जाएगी । शुक्रवार को हुई बैठक में कैबिनेट मंत्री रेखा आर्या ने इस योजना की समीक्षा करते हुए योजना में नए प्रावधान जोड़ने के निर्देश दिए ।उन्होंने कहा कि विभागीय अधिकारी नए बदलावों का अंतिम प्रारूप तैयार करके जल्द से जल्द उनके समक्ष फाइल भेजें।

पुलिस मुठभेड़ में गोली लगने से घायल बदमाश गिरफ्तार, अन्य फरार तलाश जारी

हरिद्वार । जिले के पिरान कलियर थाना क्षेत्र में पुलिस और बदमाशों के बीच मुठभेड़ हो गई। इस मुठभेड़ में एक बदमाश के पैर में गोली लग गई। जिससे वह घायल हो गया। जबकि उसके अन्य साथी मौके से फरार हो गए। पुलिस द्वारा घायल बदमाश को उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना के बाद आला अधिकारी भी मौके पर पहुंचे हैं और घटना की जानकारी जुटाई. घायल का नाम नोशाद (35 वर्ष, पुत्र ईसाक निवासी सिकरौढा थाना भगवानपुर) है। आरोपी के खिलाफ पहले भी गौ तस्करी के कई मुकदमे दर्ज हैं। मंगलवार अल सुबह पिरान कलियर थाना पुलिस को रोलहेडी गांव के पास जंगल में गौ तस्करी करने वाले बदमाशों की सूचना मिली थी। सूचना पर तत्काल पुलिस टीम बताए गए ठिकाने पर पहुंची थी, जहां पर पुलिस टीम ने बदमाशों की तलाश शुरू की। इसी दौरान उन्हें कुछ संदिग्ध दिखाई दिए। पुलिस टीम द्वारा उनसे पूछताछ करने के दौरान बदमाशों ने पुलिस पर फायरिंग कर दी। जवाबी फायरिंग में पुलिस की एक गोली बदमाश के पैर में जा लगी। जिससे वह घायल होकर नीचे गिर गया। हालांकि, बदमाश के अन्य साथी मौके से फरार होने में कामयाब रहे, जिनकी पुलिस तलाश कर रही है। बताया जा रहा है कि सभी बदमाश गौ तस्कर हैं। पुलिस द्वारा घायल बदमाश को उपचार के लिए रुड़की के सिविल अस्पताल में भर्ती कराया गया है। मुठभेड़ की सूचना मिलते ही पुलिस के आला अधिकारी भी मौके पर पहुंचे हैं और घटना की जानकारी जुटाई गई है। इसी के साथ अधिकारियों ने सिविल अस्पताल पहुंचकर घायल से पूछताछ की है।

भारत की सुरक्षा के लिए आपरेशन सिंदूर जरूरी: स्वामी रामभजन

हरिद्वार/ डरबन। अंतरराष्ट्रीय संत स्वामी रामभजन वन महाराज ने कहा देश की सुरक्षा सर्वोपरि है और सुरक्षा से खिलवाड़ करने वालों का खात्मा जरूरी है। आतंकवाद को समाप्त करने के लिए भारत सरकार के आपरेशन सिंदूर का समर्थन करते है। इसके साथ ही भारत के जांबाज सैनिकों की वीरता को सलाम करते हैं। सेना के जवानों ने अपनी जान की बाजी लगाकर देश के स्वाभिमान की रक्षा के आतंकवाद के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया है। आतंकवाद पर कड़ा प्रहार करने के लिए श्री तपोनिधि पंचायती अखाड़ा, निरंजनी एवं शिवा शक्ति मेडिटेशन सेंटर के संस्थापक नागा संन्यासी स्वामी रामभजन वन महाराज ने भारत सरकार को बधाई दी है। उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी से आतंकवाद का समूल नाश करने की मांग की है। प्रेस को जारी बयान में स्वामी रामभजन वन महाराज ने कहा आतंकवाद का कोई धर्म नही होता है और यह संपूर्ण मानवतावाद के लिए खतरा है। ऐसे में आतंकवाद को जड़ से उखाड़ कर फेंक देना होगा। उन्होंने मानवता को शर्मशार करने वाली पहलगाम आतंकी हमले की घटना की कड़े शब्दों में निंदा की। स्वामी रामभजन वन ने कहा पहलगाम आतंकी घटना की पुनरावृत्ति न हो । इसके लिए आपरेशन सिंदूर की जरूरत है। भारत ही नहीं संपूर्ण विश्व में शांति चाहने वाले लोग भारत सरकार के साथ है। उन्होंने कहा आपरेशन सिंदूर भारत सरकार की आतंकवाद के खिलाफ कार्रवाई हैं। इसका किसी देश के साथ कोई लेना-देना नहीं है। हां आतंकवाद का समर्थन करने वाले भारत विरोधी इसके दायरे में आ सकते है।

जल जीवन मिशन के प्रस्तावित पेयजल योजनाओं को तीन माह में पूरा करें : डीएम

हरिद्वार । डीएम कमेंद्र सिंह ने जल जीवन मिशन के तहत प्रस्तावित पेयजल योजनाओं को तीन माह की भीतर पूरा कराने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि योजनाएं पूरी कराने के साथ ही हर घर जल उपलब्ध कराया जाए। उन्होंने शुक्रवार को रोशनाबाद मुख्यालय में जल जीवन मिशन की समीक्षा की। उन्होंने एक माह के बीतर पीएम गति शक्ति पोर्टल पर जल जीवन मिशन के तहत बिछायी गयी पाइप लाइन की केएमएल फाइल योजनावार अपलोड करने के निर्देश दिए।

पाकिस्तान पर हुई कार्रवाई से प्रसन्न होकर निकाली तिरंगा यात्रा

हरिद्वार । महानगर व्यापार मंडल ने शुक्रवार को पाकिस्तान के हमले के प्रयास का मुंहतोड़ जवाब देने पर तिरंगा यात्रा निकाली। कहा कि प्रत्येक नागरिक सेना को हर सहयोग देने को तैयार है। महानगर व्यापार मंडल के जिलाध्यक्ष सुनील सेठी ने कहा देशवासी सेना की वजह से ही सुरक्षित हैं। सेना दिनरात हवाई हमलों से देश की सुरक्षा कर दुश्मनों को धूल चटा रही है। यह सभी के लिए गर्व की बात है। उन्होंने पीएमओ ऑफिस को पत्र भेजकर एक कोष बनाने की मांग की जिसमें सभी देशवासी अपना सहयोग दे सकें। श कालोनी, रवि कुमार, देवेंद्र सिंह, सुनील मनोचा, मुकेश अग्रवाल, सोनू चौधरी, पंकज माटा, हरीश अरोड़ा उपस्थित रहे।

स्वामी,मुद्रक व प्रकाशक अवनीश कुमार द्वारा भगवती प्रिंटर्स,इण्डस्ट्रियल एरिया, हरिद्वार से छपवाकर ग्रा. बसवाखेड़ी पो. मंगलौर, हरिद्वार (उत्तराखण्ड़) से प्रकाशित किया।

सम्पादकः अवनीश कुमार, मो० 9410553400

ई-मेलः liveskgnews@gmail.com

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र हरिद्वार न्यायालय में ही होगा)

सभी लेखों में सम्पादक की सहमति जरूरी नही है।